04 - अटूट बंधन

05 - थियोदोर रूसो, शार्ल दोबिन्यी और बार्बिजाँ

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 16 नवंबर, 2025

06 - जनजातीय समाज का इतिहास गौरवशाली और समृद्धः नरेन्द्र शिवाजी

07 - परदे पर घिर रोमांस के तीन दशक

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 76, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

गंगा-कोसी संगम...

कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है। गंगा कोसी संगम का यह दृश्य कटिहार का है। फोटो- गिरीश शर्मा

सुप्रभात

आतंकवाद का भी धर्म होता है
वे कहते हैं-
हम अल्लाह के नाम पर मारते हैं
जैसे अल्लाह ने उनके हाथों में
लिख दिए हो खून के फरमान वे मस्जिदों से नहीं
नफरत की फैक्ट्रीयों से निकलते हैं
जहां जहन में धर्म का जहर घोला जाता है
जहां जन्नत की हूरों की आभासी तस्वीरें
रक्त की स्याही से बनाई जाती हैं
जो धर्म को मनुष्यता से ऊपर रखते हैं
उन्होंने कुरान की आयतें नहीं पढ़ी
उन्होंने सिर्फ इतना सीखा
कि इंसान के धर्म को
उसके मरने का कारण होना चाहिए
पैगंबर ने कभी नहीं कहा-
कि निर्दोषों का रक्त बहाओ
या मजहब को मनुष्यता से ऊपर रखो
मक्का की हवाओं ने
हिंसा को पनाह नहीं दी
बल्कि अमन की सुगंध को फैलाया
परंतु वे जो धर्म की तलवार लेकर चलते हैं
धर्म के नाम पर फिदायीन बन जाते हैं
हूरों के चक्कर में मजहब को बदनाम करते हैं
और जिहाद के नाम पर निर्दोषों का रक्त बहाते हैं
वे धर्म का मतलब भी नहीं समझते
उन्होंने ईश्वर को कैद कर लिया है
इसलिए वे न खुदा के हैं, न धरती के परंतु यह भी सत्य है-
कि आतंक जब धर्म के गर्भ में पलता है
तो उसका भी धर्म हो जाता है
वह धर्म, जो सिखाता है घृणा
वह धर्म, जो सिखाता है कायरता
वह धर्म, जो सिखाता है हिंसा
वह धर्म जो कहता है ईश्वर एक नहीं है
ईश्वर सिर्फ हमारा है, तुम्हारा नहीं है
इसलिए आतंक जब धर्म के नाम पर पनपता है
तो उसे नाम देना ही पड़ता है ताकि दुनिया जान सके-
कि कौन से जहर ने इंसान को इंसान नहीं रहने दिया।

-डॉ. जीवन एस. रजक

बिरसा मुंडा के घर जाने वाला मैं पहला प्रधानमंत्री

मोदी बोले-6 दशक तक राज करने वाली कांग्रेस ने आदिवासियों को उनके हाल पर छोड़ा था

सूरत (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को गुजरात पहुंचे। उन्होंने कहा- मैं देश का पहला पीएम हूं, जो भगवान बिरसा मुंडा के घर गया था। उनके परिवार के लोगों के साथ मेरा मिलना जारी है। उन्होंने आगे कहा कि देश में 6 दशक तक राज करने वाली कांग्रेस ने आदिवासियों को उनके हाल पर छोड़ा था। यहां कुपोषण, स्वास्थ, सुरक्षा, शिक्षा का अभाव रहा। पीएम ने इससे पहले सूरत में बन रहे मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर का जायजा लिया। इसके बाद नर्मदा जिले के डेडियापाडा पहुंचे और देवमोगरा मंदिर में पंडोरी माता की पूजा की। पंडोरी माता को गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान के आदिवासी समुदाय अपनी कुलदेवी मानते हैं। पीएम ने डेडियापाडा में 4 किमी लंबा रोड शो भी किया। इस दौरान हजारों लोग सड़क पर थे।

तिरंगे की शान बढ़ाने में आदिवासी बेटी-बेटों का योगदान

मोदी ने कहा- दुनिया में तिरंगे की शान बढ़ाने में आदिवासी बेटी-बेटों का योगदान है। अब हर बड़ी प्रतियोगिता में आदिवासी खिलाड़ी निकल रहे हैं। भारत की महिला क्रिकेट टीम में हमारी जनजातीय बेटी ने भूमिका निभाई। जनजातीय इलाकों में स्पोर्ट्स फेसिलिटी बढ़ाई जा रही है। भाजपा- वंचित को वरीयता के नियम पर काम करती है। केंद्र की कई योजनाओं को आदिवासी वर्गों के पास जाकर लॉन्च करते हैं। आयुष्मान योजना झारखंड के आदिवासी इलाके में लॉन्च की गई थी। मैं देश का पहला पीएम हूं, जो भगवान बिरसा मुंडा के घर गया था। उनके परिवार के लोगों के साथ मेरा मिलना जारी है।

एनडीए ने हमेशा आदिवासी समाज के लोगों ने शीर्ष पदों पर बिठाया

मोदी बोले- एनडीए ने हमेशा आदिवासी समाज के लोगों ने शीर्ष पदों पर बिठाया है। छत्तीसगढ़ के सीएम राज्य का कायाकल्प कर रहेहैं। उड़ीसा सीएम जनजातीय समाज के हमारे माझी जी उड़ीसा का विकास कर रहे हैं। हमने कई राज्यों में आदिवासी सीएम दिए। भाजपा ने कई राज्यों में आदिवासी को जगह दी। मंगूभाई पटेल एमपी के राज्यपाल हैं। सोनोवाल जी शिपिंग मिनिस्ट्री संभाल रहे हैं। भीड़ में मौजूद बच्ची की लाई पेंटिंग एसपीजी जवानों से लेने का कहा..साथ ही बच्चे से कहा- मैं आपको चिट्ठी लिखूंगा। मोदी ने कहा- भाजपा ने वन उपज पर एमएसपी बढ़ाई, श्री अन्न पर ध्यान दिया।

आलीराजपुर जनजातीय संस्कृति और स्वाभिमान की है भूमि

जनजातीय गौरव दिवस हमारे लिए दीवाली और होली की तरह : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आज का दिन हमारे लिए दीवाली और होली की ही तरह है। भारत माता के अमर सपूत स्वाभिमान और स्वराज के प्रतीक, जनजातीय अस्मिता के संरक्षक धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती धूमधाम से मनाई जा रही है। पांचवें जनजातीय गौरव दिवस पर चारों दिशाओं में भारत अपने जनजातीय नायकों की स्मृतियों को पूज रहा है। जनजातियों के पराक्रम और परिश्रम से सजी आलीराजपुर की पावन मिट्टी में आजादी की लड़ाई के 2 अमर योद्धा शहीद छीतु किराड़ और शहीद चंद्रशेखर आजाद ने जन्म लिया है। शहीद छीतु किराड़ ने 1857 के संग्राम में जनजातीय शक्ति को संगठित कर अंग्रेजों को नाकों चने चबवा दिए। भगवान बिरसा मुंडा और अमर शहीद छीतु किराड़ की प्रतिमा के अनावरण का अवसर प्राप्त होना परम सौभाग्य की बात है। जनजातीय संस्कृति से समृद्ध आलीराजपुर क्षेत्र किसी स्वर्ग से कम नहीं है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश की विकास की अनेक सौगातें मिली हैं। जनजातीय गौरव दिवस पर जनजातीय कल्याण के लिए आलीराजपुर को 250 करोड़ रूपए की लागत से 156 विकास कार्यों की सौगात मिल रही है। जनजातीय भाई-बहनों की शिक्षा, स्वास्थ्य और अधोसंरचना के 156 कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर आलीराजपुर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और वंदे मातरम् के समवेत गायन में सहभागिता की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भगवान बिरसा मुंडा और शहीद छीतु किराड़ की प्रतिमा का अनावरण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के आलीराजपुर पहुंचने पर जनजातीय भाई-बहनों ने आत्मीय स्वागत किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में आज हर पात्र जरूरतमंद परिवार को पक्के मकान मिल रहे हैं। लाड़ली बहनों की राशि बढ़ाकर हर महीने रक्षाबंधन और भाईदूज मनाई जा रही है। अब बहनों को 1500 रुपए महीने मिलने लगे हैं। विकास और जनकल्याण के लिए हमारी भावना और संकल्प स्पष्ट है। माताएं-बहनें अपनी परवाह न करते हुए पूरे परिवार के भरण-पोषण का ध्यान रखती हैं। बहनें, लाड़ली बहना योजना के पैसों से परिवार की जरूरतें पूरी कर रही हैं, बच्चों की फीस भर रही हैं।

राजा आलिया के नाम पर आलीराजपुर होने से मिली जिले को उचित पहचान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अंग्रेजों ने देशवासियों पर अत्याचार और कत्लेआम किए। भगवान बिरसा मुंडा ने जनजातीय समाज को साथ लेकर सशस्त्र विद्रोह कर अंग्रेजों को चुनौती दी। उन्होंने नशा मुक्ति और गौमाता के संरक्षण के लिए भी अभियान चलाया। टंट्या मामा, अमर क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद और शहीद छीतु किराड़ ने मध्यप्रदेश की धरती से आजादी के अभियान को आगे बढ़ाया। आजादी के दीवानों का स्मरण कर हम सब गौरवान्वित अनुभव करते हैं। छीतु किराड़ इस धरती के पराक्रम का प्रतीक थे।

राम मंदिर में ध्वजारोहण की शुरू हुई भव्य तैयारियां

चल रहा ट्रायल, 9 दिन बाद आधी रात से बंद होंगे कपाट

अयोध्या (एजेंसी)। राम मंदिर में राम लला का दर्शन 24 नवंबर की रात से बंद हो जाएगा और ध्वजारोहण के दिन 25 नवंबर को आम जन के लिए दर्शन प्रतिबंधित रहेगा। यह जानकारी शुक्रवार को सायं श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने दी। उन्होंने बताया कि ध्वजारोहण कार्यक्रम में पीएम नरेन्द्र मोदी सीएम योगी आदित्यनाथ आर एस एस प्रमुख मोहन भागवत और यूपी की गवर्नर आनंदीबेन पटेल मौजूद रहेंगी। उनके सामने शुभ मुहूर्त पर राम मंदिर के मुख्य शिखर पर धर्म ध्वज धीरे-धीरे 190 फुट ऊंचाई पर ले जाया जाएगा। दंड पर स्थापित होने के बाद पीएम मोदी इसका ध्वजारोहण करेंगे। ध्वजारोहण राम मंदिर निर्माण का संदेश देगा। मिश्र ने बताया कि मंदिर परिसर में जहां प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम का मंच बना था उसी स्थान पर उससे थोड़े बड़े आकार का मंच का निर्माण शुरू हो गया है। यहां कुर्सियों के लगाने के प्लान के मुताबिक कुर्सियां भी अतिथियों के लिए लगेगी। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में पीएम मोदी उसी स्थान पर बने मंच से संबोधित किया था। अब मंदिर का निर्माण पूरा होने पर पीएम इसी मंच से निर्माण पूरा होने की घोषणा कर पूरे विश्व को संदेश देंगे। डॉ मिश्र ने बताया कि मंदिर में बचा, फिनिशिंग का काम भी अंतिम चरण में चल रहा है। वीआईपी के लिए लगी लिफ्ट का संचालन शुरू हो गया है।

दो अन्य सीनियर सिटीजन व मंदिर स्टाफ की लिफ्ट्स को लगानें का काम चल रहा है। उन्होंने बताया कि मंदिर ट्रस्ट परिसर में साफ सफाई सीटिंग प्लान, लाइटिंग व फूलों की सजावट, आदि के प्लान को अंतिम रूप देकर काम करवाया जा रहा है।

- **20 नवंबर को कलश यात्रा से उत्सव का शुभारंभ-** श्री राम जन्मभूमि मंदिर में 25 नवंबर 2025 को होने जा रहे ध्वजारोहण उत्सव का शुभारंभ 20 नवंबर 501 महिलाओं की कलश यात्रा से होगा। यह कलश यात्रा सरयू तट से कलश में सरयू जल भर कर वैदिक पूजन के साथ शुरू होकर श्री राम जन्म भूमि मंदिर पर समाप्त होगी । यह जानकारी मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी डा अनिल मिश्र ने दी है। वहीं कार्यक्रम में पीएम के आगमन को लेकर जहां प्रशासन ने भी तैयारियां शुरू कर दी हैं। कलेक्ट्रेट सभागार में डीएम निखिल टीकाराम फुंडे ने जिले के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक कर संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि मार्गों की सुदृढ़ीकरण, साफ सफाई आदि कार्य, जल्द पूरा करें।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c

न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 16 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

ठंड से कांप रहा राजस्थान एमपी में चल रही शीतलहर

● 10 शहरों में सीजन का सबसे कम रहा तापमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमालय से आ रही बर्फीली हवाओं से उत्तर और मध्य भारत के राज्यों के तापमान में गिरावट आई है। राजस्थान में इस सीजन में पहली बार तापमान 5 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। सीकर, अलवर, फतेहपुर (सीकर) समेत 10 से ज्यादा शहर ऐसे रहे, जहां इस सीजन का सबसे कम तापमान दर्ज हुआ। मध्य प्रदेश में लगातार शीतलहर चल रही है। खासकर भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, ग्वालियर और

जबलपुर संभाग के शहरों में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री के नीचे है। इससे पहले गुरुवार-शुक्रवार की रात शहडोल सबसे ठंडा रहा। यहां पहली बार पारा 7.2 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। 8 डिग्री के साथ शिवपुरी दूसरा सबसे ठंडा शहर रिकॉर्ड किया गया। दिल्ली में बुधवार को हवा की गुणवत्ता थोड़ी सुधरी, लेकिन प्रदूषण का असर लोगों पर बना हुआ है। 14 नवंबर की सुबह 6.15 बजे सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के आंकड़ों के मुताबिक औसत एक्यूआई 386 रिकॉर्ड हुआ।

राजनीति छोड़ रही और परिवार से भी नाता तोड़ रही

● लालू की बेटी रोहिणी का ऐलान, चल रहा था टकराव

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार का चुनाव इस बार लालू परिवार को बड़ा घाव देकर गया है। पहले तो चुनाव में सीटों की संख्या घटी और सियासी साख दांव पर लग गई। अब परिवार भी बिखरता नजर आ रहा है। बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के 24 घंटे भी नहीं बीते हैं कि लालू यादव की बेटी रोहिणी ने राजनीति और

परिवार दोनों छोड़ने का ऐलान कर दिया। एक्स पर लिखी पोस्ट में रोहिणी आचार्य ने यह ऐलान किया। बता दें कि बिहार चुनाव से कुछ वक्त पहले ही लालू यादव ने अपने बड़े बेटे तेज प्रताप यादव को पार्टी और परिवार दोनों से बेदखल कर दिया था। रोहिणी ने अपनी इस पोस्ट में संजय यादव पर गंभीर आरोप लगाए हैं। रोहिणी ने लिखा है कि संजय यादव और रमीज ने उन्हें ऐसा करने के लिए कहा है। उन्होंने लिखा कि मैं सारे आरोप अपने ऊपर लेती हूं।

अल फलाह यूनिवर्सिटी पर और कसा शिकंजा

● जमीन की पैमाइश शुरू, भूमि अधिग्रहण में गड़बड़ी का शक

चंडीगढ़ (एजेंसी)। दिल्ली में लाल किले के पास हुए आतंकी हमले के बाद फरीदाबाद के धौज गांव में स्थित अल फलाह यूनिवर्सिटी पर सरकार और एजेंसियों ने शिकंजा कस दिया है। आतंकी गतिविधियों का केंद्र बनी अल फलाह यूनिवर्सिटी की जमीन की जिला नगर योजनाकार इन्फोर्समेंट की टीम ने पैमाइश शुरू कर दी। करीब एक घंटे तक टीम ने पैमाइश के साथ प्रबंधन से रिकॉर्ड भी तलब किया। बताया जा रहा है कि पैमाइश

करने का आदेश हरियाणा सरकार ने जारी किया है। टीम की ओर से यूनिवर्सिटी प्रबंधन से भी सारा रिकॉर्ड मांगा गया है। अब टीम पूरी रिपोर्ट तैयार करके सरकार को भेजेगी। इस पैमाइश का मकसद ये पता लगाना है कि 70 एकड़ के विशाल इलाके में फैली इस यूनिवर्सिटी के लिए भूमि अधिग्रहण में कोई धांधली तो नहीं हुई।

साल 2014 में कांग्रेस राज में मिली थी मान्यता- अल फलाह यूनिवर्सिटी की शुरुआत 1997 में एक इंजीनियरिंग कॉलेज के रूप में हुई थी। 2013 में अल-फलाह इंजीनियरिंग कालेज को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की असेसमेंट एंड एक्रेडिटेशन काउंसिल (नैक) से 'ए' कैटेगरी की मान्यता प्राप्त हुई। अल-फलाह मेडिकल कॉलेज भी इसी दायरे में है।

अब नाबालिग भी ले सकते हैं अग्रिम जमानत

● कोलकाता हाईकोर्ट का फैसला, कहा-बेल के लिए कर सकेंगे आवेदन

जुवेनाइल कानून में मनाही का जिक्र नहीं, अभी 18+ वाले ही हकदार

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता हाईकोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि अब किसी भी अपराध में आरोपी नाबालिग भी एंटीसिपेटरी बेल के लिए आवेदन कर सकेंगे। इससे पहले सिर्फ बालिग आरोपियों को ही गिरफ्तारी से पहले जमानत लेने का हक था। तीन जजों की डिवीजन बेंच ने कहा कि जुवेनाइल जस्टिस एक्ट तब लागू होता है जब नाबालिग पकड़ा जाता है और उसे जुवेनाइल बोर्ड के सामने पेश किया जाता है। लेकिन अग्रिम जमानत तो गिरफ्तारी से पहले का अधिकार है, ताकि किसी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता सुरक्षित रहे। यह फैसला जस्टिस जय सेनगुप्ता, जस्टिस तीर्थंकर घोष और जस्टिस बिवास पटनायक की बेंच ने दिया। देश के किसी भी हाईकोर्ट की तरफ से सुनाया गया इस तरह का यह पहला फैसला है। यह मामला उन चार नाबालिगों की याचिका से शुरू हुआ, जिन्हें 2021 में पश्चिम बंगाल के रघुनाथगंज पुलिस स्टेशन में दर्ज मामलों में गिरफ्तारी का डर था। मुद्दा यह था कि क्या जुवेनाइल जस्टिस एक्ट, 2015 उन्हें अग्रिम जमानत (धारा 438) का अधिकार देता है या नहीं। इस बात पर जजों की अलग-अलग राय थी इसलिए एक सिंगल जज ने इसे बड़ी पीठ के पास भेज दिया था, ताकि फैसला हो सके।

तीन जजों का फैसला, दो सहमत, एक असहमत

जस्टिस जय सेनगुप्ता और जस्टिस तीर्थंकर घोष ने फैसले पर सहमति देते हुए कहा कि अगर यह मान लिया जाए कि नाबालिगों को अग्रिम जमानत नहीं मिलेगी, तो इसका मतलब होगा कि बच्चों से वह अधिकार छीन लेना जो बालिगों को मिलता है, और यह बात बच्चों की भलाई वाली सोच के खिलाफ है। संविधान में दी गई व्यक्तिगत आजादी को कम करने का कोई इरादा लॉ बनाने वालों का नहीं था। इसलिए जुवेनाइल जस्टिस एक्ट, जो बच्चों की भलाई के लिए बना है, उसे ऐसा कानून नहीं माना जा सकता जो बच्चों को किसी दूसरे फायदे वाले कानूनी अधिकार जैसे अग्रिम जमानत से रोके, जब तक कि एक्ट में इसे साफ-साफ मना न किया गया हो। अगर किसी नाबालिग को अग्रिम जमानत दी जाती है, तो कोर्ट ऐसे बच्चों के हितों को ध्यान में रखते हुए ऐसा नियम बना सकता है, ताकि यह जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड के काम में दखल न दे।

जीत के बाद भाजपा का 'सफाई अभियान' शुरू

● आरके सिंह पार्टी से निलंबित, अभी कई और पर गिरेगी गाज

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में एनडीए की जीत के अगले दिन भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने बड़ी कार्रवाई करते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री आरके सिंह को पार्टी से निलंबित कर दिया है। भाजपा ने उन्हें नोटिस भेजकर पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल होने पर जवाब भी मांगा गया है। आरा से भाजपा के पूर्व सांसद और नरेंद्र मोदी सरकार में मंत्री रह चुके आरके सिंह बीते लंबे समय से पार्टी में सक्रिय नहीं हैं। उन पर पार्टी विरोधी गतिविधियों के चलते यह कार्रवाई की गई। भाजपा ने शुक्रवार को अशोक अग्रवाल और कटिहार की मेयर उषा अग्रवाल को भी कारण बताओ नोटिस भेजा। बिहार भाजपा की ओर से भेजे गए नोटिस में आरके सिंह से कहा गया कि उनकी गतिविधियां पार्टी के विरोध में है, इसे गंभीरता से लिया गया है। इसलिए उन्हें निलंबित करते हुए पार्टी से निष्कासित क्यों न कर दिया जाए।

फरीदाबाद से जब्त विस्फोटक से श्रीनगर थाने में धमाका

● अब तक 12 लोगों की मौत, 32 घायल, चल रहा इलाज ● सैम्पल लेते समय अमोनियम नाइट्रेट में हो गया था ब्लास्ट

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में नौगाम पुलिस स्टेशन में शुक्रवार रात करीब 11.22 बजे बड़ा धमाका हुआ। 9 लोगों की मौत हो गई है, 32 लोग घायल हैं। इनका 92 आर्मी बेस और सौरा हॉस्पिटल में इलाज जारी है। अधिकारियों के मुताबिक, ब्लास्ट उस समय हुआ जब पुलिस व्हाइट कॉलर आतंकी मॉड्यूल मामले में जब्त विस्फोटक के सैंपल ले रही थी। हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि क्या पुलिस स्टेशन में पूरा 360 किलो विस्फोटक रखा गया था या फिर कुछ हिस्सा ही लाया गया था। जम्मू-कश्मीर के डीजीपी नलिन प्रभात ने कहा कि, यह एक हादसा था। सैंपलिंग के वक्त ब्लास्ट हुआ। मारे गए 9 लोगों में से एक इंस्पेक्टर, 3 फॉरेंसिक टीम मेंबर, 2 क्राइम ब्रांच फोटोग्रॉफर, 2 राजस्व अधिकारी और एक दर्जी शामिल है। दरअसल यह विस्फोटक हरियाणा के फरीदाबाद से गिरफ्तार डॉ. मुजम्मिल गनई के किराए के घर से जब्त किया गया था। गनई को दिल्ली ब्लास्ट केस में पहले ही अरेस्ट किया जा चुका है। 10 नवंबर को दिल्ली में लाल किला के पास कार ब्लास्ट में 13 लोगों की मौत हो गई थी।

साइक्लोथॉन ने उजागर की मप्र में रोड सेफ्टी एक्शन प्लान की आवश्यकता

भोपाल। विश्व सड़क दुर्घटना पीड़ित स्मरण दिवस (WDoR 2025) के उपलक्ष्य में रोड सेफ्टी नेटवर्क (RSN) ने कंज्यूमर वॉइस, नई दिल्ली और नेशनल सेंटर फॉर ह्यूमन सेटलमेंट्स ऐंड एनवायरनमेंट (NCHSE) के सहयोग से भोपाल में एक साइक्लोथॉन का आयोजन किया। यह आयोजन सड़क दुर्घटनाओं में खोई गई ज़िंदगियों को श्रद्धांजलि देने और मध्यप्रदेश में प्रभावी स्पीड मैनेजमेंट तथा एक व्यापक राज्य रोड सेफ्टी एक्शन प्लान की तत्काल आवश्यकता के प्रति जन जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया।

स्पीड मैनेजमेंट तथा रोड सेफ्टी एक्शन प्लान की पुकार विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम में राज्य में बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं की ओर ध्यान आकर्षित किया गया, विशेष रूप से पैदल यात्रियों और साइकिल चालकों जैसे सड़क के संवेदनशील उपयोगकर्ताओं से जुड़े हादसों पर। इन संवेदनशील उपयोगकर्ताओं की मृत्यु दर लगातार बढ़ती जा रही है, जिसे देखते हुए वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित गति नियंत्रण उपायों को अपनाने की आवश्यकता और भी महत्वपूर्ण हो गई है।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व पुलिस महानिदेशक अरुण गुर्टू द्वारा ह्रष्ट।स्थ परिसर, अरेरा कॉलोनी से किया गया। इसके पश्चात लगभग सत्तर साइकिल चालकों ने शहर के प्रमुख मार्गों पर धीमी गति–सुरक्षित सड़कें तथा जीवन बचाएं-गति कम करें जैसे संदेशों के साथ रैली निकाली। नागरिकों, विद्यार्थियों तथा कई नागरिक व फिटनेस समूहों–जैसे बी बी आर जी, अर्ज़ वुमेन एंड एंवायरनमेंट वेलफेयर एसोसिएशन, हैल्पबॉक्स फ़ाउंडेशन आदि–ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे यह संदेश और मजबूत हुआ कि सड़क सुरक्षा सामूहिक ज़िम्मेदारी है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की रोड एक्सीडेंट्स इन इंडिया रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश में वर्ष 2023 और 2024 में क्रमशः 55,327 और 56,327 सड़क दुर्घटनाएँ दर्ज हुईं, जिनमें 13,798 और 14,791 लोगों की मौत हुई। ओवरस्पीडिंग दुर्घटनाओं और मौतों का प्रमुख कारण बनी रही जो सुरक्षित गति सीमा, वैज्ञानिक यातायात प्रबंधन और मजबूत राज्य स्तरीय रोड सेफ्टी एक्शन प्लान की सख्त आवश्यकता को दर्शाती है।

आरम्भ में कंज़्यूमर वॉइस के सीईओ आशीम सान्याल का संदेश पढ़ा गया जिसमे उन्होंने कहा कि सड़क पर खोई हर ज़िंदगी रोकी जा सकती है। वैज्ञानिक स्पीड मैनेजमेंट और एक सशक्त राज्य रोड सेफ्टी प्लान लागू करके हम सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को काफी हद तक कम कर सकते हैं और संवेदनशील सड़क उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं।

एन सी एच एस सी के महानिदेशक डॉ. प्रदीप नंदी ने कहा, मध्यप्रदेश की रोड सेफ्टी योजना में स्पीड मैनेजमेंट को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि आई आई टी खड़गपुर द्वारा विकसित वैज्ञानिक मॉडल सुरक्षित और संदर्भ-विशिष्ट गति सीमाएँ निर्धारित करने में अत्यंत उपयोगी हैं जिससे अनेक ज़िंदगियों को बचा सकते हैं। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए अरुण गुर्टू ने कहा, हर आँकड़े के पीछे एक ऐसा परिवार है जिसने अपने किसी प्रियजन को खोया है। उन्होंने इस प्रकार के आयोजनों को शहर के विभिन्न हिस्सों में नियमित रूप से करने की आवश्यकता बताई ताकि सभी संबंधित पक्षों को याद रहे कि स्पीड मैनेजमेंट सार्वजनिक प्राथमिकता बनना चाहिए। उन्होंने नीति-निर्माताओं, प्रवर्तन एजेंसियों और नागरिकों से मिलकर संवेदनशील उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा के लिए कार्य करने और रोकी जा सकने वाली मौतों को रोकने का आह्वान किया। कार्यक्रम साइक्लोथॉन याद रखें। सहयोग करें। कार्रवाई करें। संदेश को आगे बढ़ाने की सामूहिक प्रतिज्ञा के साथ समाप्त हुआ। नागरिकों, नीति-निर्माताओं और प्रवर्तन एजेंसियों से स्पीड मैनेजमेंट को जनआंदोलन बनाने और सुरक्षित सड़क संस्कृति स्थापित करने का आग्रह किया गया।

बिहार में हार के बाद खड़गे के घर हुई बड़ी बैठक

● समीक्षा बैठक में राहुल गांधी भी रहे मौजूद, दिए अपने सुझाव

कांग्रेस बोली- चुनाव में गड़बड़ी हुई है, 2 हफ्तों में सबूत देंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार चुनाव में करारी हार के बाद कांग्रेस ने शनिवार को दिल्ली में पहली समीक्षा बैठक बुलाई। यह बैठक पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के आवास पर हुई, जिसमें राहुल गांधी, केसी वेणुगोपाल और अजय माकन मौजूद रहे। बैठक में नेताओं ने चुनाव नतीजों की समीक्षा की, संगठन की कमियों पर चर्चा की और आगे की रणनीति को लेकर सुझाव दिए। सूत्रों के मुताबिक, पार्टी अब समझने की कोशिश कर रही है कि बिहार में इतनी बड़ी हार क्यों हुई। बैठक के बाद कांग्रेस नेताओं ने भाजपा पर चुनाव में गड़बड़ी करने का आरोप लगाया है। कांग्रेस नेता केसी वेणुगोपाल ने कहा कि पार्टी गड़बडियों के सबूत इकट्ठा कर रही है। 2 हफ्तों में देश के सामने रखेंगे। दरअसल कांग्रेस ने इस चुनाव में 60 सीटों पर उम्मीदवार उतारे, लेकिन सिर्फ 6 सीटें जीत पाई। पार्टी का वोट शेयर 8.71 फीसदी रह गया, जबकि 2020 में 70 सीटों पर 19 सीटें जीती थी।

● **सीएम फेस से सीटों के बंटवारे तक, महागठबंधन फंसता रहा-** महागठबंधन की सीटें 50 तक भी नहीं पहुंची हैं। इसकी बड़ी वजह राजद और कांग्रेस की खराब परफॉर्मेंस है। राहुल और तेजस्वी ने वोटर अधिकार यात्रा से महागठबंधन को एक दिखाने की कोशिश की, लेकिन तेजस्वी को सीएम फेस घोषित करने पर उनमें फूट पड़ गई। बाद में कांग्रेस भी तेजस्वी को सीएम फेस बनाने पर तैयार हो गई, लेकिन तब तक मैसेज चला गया कि राजद और कांग्रेस में मनमुटाव है। इसका असर प्रचार से लेकर टिकट बंटवारे तक दिखा। चुनाव के पहले फेज के लिए नामांकन वापस लेने के आखिरी दिन तक महागठबंधन में तनातनी होती रही। सीट बंटवारे पर राजद और कांग्रेस अड़ी रहीं। इसका नतीजा ये हुआ कि सभी पार्टियों के कैंडीडेट नॉमिनेशन कराते रहे, लेकिन कौन सी पार्टी कितनी सीटों पर लड़ेगी, यह साफ नहीं हुआ। चुनाव की शुरुआत से कांग्रेस और राजद ने एसआईआर, वोट चोरी और नीतिश कुमार की सेहत को मुद्दा बनाया।

2027 में जातीय समीकरण के सहारे उत्तराखंड कांग्रेस

● 2022 में बढ़ा दलित वोट शेयर, इन्हीं पर दांव की तैयारी ● अब संगठन में दूर हुए ब्राह्मण-ठाकुर, कम हुआ दबदबा

देहरादून (एजेंसी)। कांग्रेस ने हाल ही में उत्तराखंड इकाई में बड़े संगठनात्मक बदलाव किए हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि कांग्रेस ने 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए जातीय समीकरण के हिसाब से ये बदलाव किए हैं। एक तरफ कांग्रेस के राष्ट्रीय नेतृत्व के नेता, खासकर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी दलित, पिछड़ा और अल्पसंख्यक वर्गों को निर्णायक मानते हैं, और खुद को उनका हितैषी बताते हैं। वहीं दूसरी तरफ प्रदेश कांग्रेस ने अपने ताजा जातीय समीकरण में ब्राह्मण-ठाकुर वर्ग को तवज्जो दी है।

मुकेश अंबानी ने श्रीनाथजी मंदिर में विश्व स्तरीय यात्री सेवा सदन निर्माण की घोषणा

● 15 करोड़ के दान के साथ टेका माथा, प्रसिद्ध है मंदिर ● तीर्थयात्रियों के लिए सर्व सुविधायुक्त बनेगा यात्री सेवा सदन

नाथद्वारा (एजेंसी)। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और एशिया के सबसे धनवान व्यक्ति मुकेश अंबानी की आस्था और दानशीलता एक बार फिर सुर्खियों में है। वैष्णव संप्रदाय की प्रमुख पीठ श्रीनाथजी मंदिर, नाथद्वारा से जुड़ी एक खबर सामने आई है, बताया जा रहा है उन्होंने मंदिर में करोड़ों का दान दिया है।

इसके साथ ही तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए एक बड़ी परियोजना की नींव रखने की भी घोषणा की है। इस परियोजना से नाथद्वारा पहुंचने वाले भक्तों, खासकर वरिष्ठ नागरिकों को काफी लाभ पहुंचेगा, उनकी यात्रा और भी सुविधाजनक बनेगी। अंबानी परिवार की श्रीनाथजी में गहरी आस्था है।

इसी परंपरा को निभाते हुए मुकेश अंबानी ने मंदिर पहुंचकर भोग-आरती के दर्शन किए और पूज्य गुरु विशाल बावा साहेब से आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान उन्होंने अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए श्रीनाथजी मंदिर को 15 करोड़ रुपए का बड़ा दान दिया। यह दान मंदिर की व्यवस्थाओं, सेवाओं और भक्तों की सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए दिया गया है।

● **50 करोड़ से बनाया जाएगा 100 कमरों का सदन-** मुकेश अंबानी ने इस यात्रा के दौरान नाथद्वारा में विश्व स्तरीय 'यात्री और वरिष्ठ सेवा सदन' निर्माण की घोषणा की। यह परियोजना खासकर वरिष्ठ वैष्णव भक्तों और आम तीर्थयात्रियों को समर्पित होगी, जिन्हें यात्रा के दौरान आरामदायक, सुरक्षित और आवास की जरूरत रहती है। इससे भक्तों के दर्शन करने के अनुभव में बड़ा सुधार आएगा। इस सेवा सदन के निर्माण पर लगभग 50 करोड़ रु की लागत आने का अनुमान है। यह केवल एक धर्मशाला नहीं, बल्कि एक पूरी तरह सेवा से जुड़ा होगा। जानकारी के अनुसार, इसमें 100 से अधिक आधुनिक कमरों का निर्माण किया जाएगा, जिन्हें खास रूप से सीनियर सिटिजंस और तीर्थयात्रियों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया जाएगा, ताकि उन्हें सुरक्षित, आरामदायक और सुविधाजनक स्टे मिल सके। श्रीनाथजी मंदिर जाना अपने आप में एक अनोखा आध्यात्मिक एक्सपीरियंस है। इसकी सबसे खास बात इसका पूजा करने का तरीका है।

धीरेंद्र शास्त्री के आगे चल रहीं जया किशोरी

शादी की अफवाह के बाद सनातन यात्रा में पहली बार साथ दिखे, एक्ट्रेस शिल्पा और राजपाल भी पहुंचे

भोपाल। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की सनातन एकता पदयात्रा का आज नौवां दिन है। यूपी में यात्रा आज तीसरे दिन आगे बढ़ रही है। इसमें प्रसिद्ध कथावाचक जया किशोरी मथुरा से शामिल हुई हैं। यह पहला मौका है जब शादी की अफवाह के बाद धीरेंद्र शास्त्री और जया किशोरी एक साथ नजर आ रहे हैं। यात्रा बॉलीवुड अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी, फिल्म प्रोड्यूसर एकता कपूर और एक्टर राजपाल यादव भी शामिल हुए। मृदुलकांत शास्त्री, देवकीनंदन ठाकुर, स्वामी चिदानंद सरस्वती ने भी पदयात्रा में शिरकत की।

मथुरा के संस्कृत विश्वविद्यालय में बने विराम मंच पर शिल्पा शेट्टी ने कहा- एक कॉल दूर हूं, महाराज जी... जब जरूरत हो तब याद कर लेना। आज इतनी संख्या में आप लोगों को देख कर मेरा मन बहुत ही खुश हो रहा है। जो इतने महान भाव से काम कर रहे हैं, उनका साथ देना चाहिए। इसलिए आज हम सब यहां पर इकट्ठा हुए हैं।

धीरेंद्र शास्त्री ने शिल्पा को राजपाल से मिलवाया। उन्हें देखते ही शिल्पा खिलखिला उठी और आगे बढ़कर उनसे हाथ मिलाया। उन्होंने राजपाल से उनका मोबाइल नंबर भी मांगा।

करणी सेना का सीएम हाउस की ओर कूच

बोले- मांगें नहीं मानी तो भोपाल को नेपाल बना देंगे, पुलिस ने जाने से रोका

भोपाल (नप्र)। भोपाल में करणी सेना अपनी 15 मांगों को लेकर खुशीलाल ग्राउंड में विशाल क्षत्रिय क्रांति सम्मेलन का आयोजन कर रही है। सम्मेलन में करणी सेना परिवार से जुड़े हजारों लोग शामिल हुए। करणी सेना पदाधिकारियों ने स्पष्ट किया था कि उनकी मांगों को सुनने के लिए दोपहर 2 बजे तक सीएम ऑफिस से कोई अधिकारी पहुंचे। लेकिन 3 बजे तक कोई अधिकारी नहीं आने पर कार्यकर्ताओं ने सीएम हाउस की ओर कूच कर दिया।

रास्ते में भारी पुलिस बल तैनात

सम्मेलन के दौरान संभावित विवाद को देखते हुए पुलिस ने भारी सुरक्षा व्यवस्था की है। जैसे ही करणी सेना के कार्यकर्ता मैदान से सीएम हाउस की ओर बढ़े, पुलिस ने उन्हें कुछ दूरी पर ही रोक लिया। इसके बाद कार्यकर्ता सड़क पर बैठकर प्रदर्शन करने लगे। उनकी मांग है कि ज्ञापन वे पुलिस को नहीं, बल्कि सीएम ऑफिस के किसी अधिकारी को ही सौंपेंगे।

करणी सेना प्रदेश अध्यक्ष बोले- भोपाल को नेपाल बना देंगे- करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष इंदल सिंह राणा ने कहा- हमने सीएम ऑफिस को दोपहर 2 बजे तक किसी अधिकारी को भेजने का अल्टीमेटम दिया था, नहीं तो हम सीएम हाउस कूच करेंगे। उसी क्रम में हम अब ज्ञापन देने सीएम हाउस की ओर जा रहे हैं।

यह आंदोलन का अंत नहीं, बल्कि शुरुआत है। हमारी मांग है कि हरदा प्रकरण में कलेक्टर और एसपी को निलंबित किया जाए। अभी यह हमारी विनम्र अपील है, आगे देखिएगा हमें भोपाल को नेपाल बनाने में देर नहीं लगेगी।

बता दें, प्रदेश में क्षत्रिय समाज अब आर-पार की रणनीति पर उतर आया है। समाज की विभिन्न लंबित मांगों को लेकर ये आयोजन कर रहा है। इस सम्मेलन में प्रदेशभर से हजारों प्रतिनिधियों और समाजजन पहुंचे हैं।

नगरीय प्रशासन विभाग ने निकायों को पौध-रोपण की कार्य-योजना बनाने के दिये निर्देश

भोपाल (नप्र)। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने प्रदेश के सभी नगरीय निकायों को वर्ष 2026 में किये जाने वाले व्यापक पौध-रोपण अभियान की तैयारी और इससे जुड़ी कार्य-योजना बनाने के निर्देश दिये हैं। इस संबंध में आयुक्त नगरीय प्रशासन एवं विकास ने निकायों से कार्य-योजना दिसम्बर-2025 तक पूर्ण करने के लिये भी कहा है। प्रदेश में वर्ष 2025 में प्रदेश के नगरीय क्षेत्रों में नगरीय निकायों द्वारा करीब 36 लाख पौधों का रोपण किया गया है। निकायों को लगाये गये पौधों की सुरक्षा में सजगता बरतने को भी कहा गया है।

नगरीय प्रशासन द्वारा जारी निर्देशों में कहा गया है कि नगरीय निकाय अपने क्षेत्रों में हितधारकों की बैठक और कार्यशाला आयोजित कर वर्ष 2026 के पौध-रोपण लक्ष्यों का पहले आकलन करें और उसके अनुसार रणनीति बनायें। निकायों को यह भी सुनिश्चित करने के लिये कहा गया है कि कुल लक्ष्य में से शेष पौध-रोपण का कार्य निकायों द्वारा अपने संसाधनों से करना होगा। निकाय सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट, वाटर ट्रीटमेंट प्लान, ओवरहेड टैंक के आसपास की भूमि, सड़कों के दोनों ओर, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल एवं शासकीय परिसरों की बाउण्ड्रीयुक्त भूमि, नदियों, नालों, तालाबों, डैम एवं नहरों के किनारों के साथ मुक्तिधाम और खेल मैदानों के आसपास का क्षेत्र चिन्हित करने के लिये कहा गया है। शहरी क्षेत्र में पौधों की उपलब्धता के लिये उद्यानिकी एवं वन विभाग की नजदीकी नर्सरियों से अभी से सम्पर्क किया जाये। पौधों की उपलब्धता सुनिश्चित करने और पौधों के क्रय के लिये बजट के इंतजाम का प्रस्ताव जल्द तैयार किया जाये।

नगरीय क्षेत्र में अधिकतम हरियाली बढ़ाने के लिये जामुन, अर्जुन, देशी बबूल, बड़े वृक्षों जैसे पीपल, बरगद, आम, महुआ, इमली आदि।

रंगदारी नहीं देने पर पीटा, बाइक में आग लगाई

कट्टा निकालकर हवाई फायर किया, 4 बदमाशों ने शराब के नशे में मांगे थे रुपए; केस दर्ज

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में चार बदमाशों ने रंगदारी नहीं मिलने पर एक युवक पर हमला कर दिया। पहले उसे बेरहमी से पीटा, जब उसने विरोध किया तो एक बदमाश ने कट्टा निकालकर एक के बाद एक दो हवाई फायर कर दिए। इसके बाद एक बदमाश ने उसके कान सोने की बाली खींच ली, जिससे उसका कान फट गया। एक अन्य बदमाश ने उसकी बाइक छीनकर उसमें आग लगा दी।

घटना शुक्रवार रात गोला का मंदिर नारायण विहार कॉलोनी की है। जब गोलियों की आवाज सुनकर आसपास के लोग एकत्रित हुए तो हमलावर भाग गए।

- **कान की बाली छीनी, कट्टा निकालकर किया फायर-** मारपीट के दौरान विशु परिहार ने छुन्ना सिंह के कान की बाली निकाल ली जिससे कान फट गया, वहीं हनी सिंह ने उसकी पीठ पर दांत से काट लिया। पन्ना राठौर ने पत्थर पटकने से उसकी आंख के पास चोट आई। झगड़े के दौरान सचिन पवैया ने कट्टा निकालकर हवाई फायर कर दिया और पन्ना राठौर ने मोटरसाइकिल में आग लगा दी।
- **20 हजार भी रुपए भी चोरी-** घटना देखकर आसपास के लोग इकट्ठा हो गए, जिसके बाद आरोपी मौके से भाग निकले। जाने से पहले उन्होंने धमकी दी कि रिपोर्ट दर्ज कराई तो जान से खत्म कर देंगे। छुन्ना सिंह के मुताबिक, झगड़े में उसकी जेब में रखे लगभग 20,000 रुपए भी गिर गए। इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी सतेन्द्र सिंह और हरेन्द्र सिंह गुर्जर बताए जा रहे हैं। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नए उद्योगों की स्थापना से मिल रही अर्थव्यवस्था को निर्णायक गति : मुख्यमंत्री

आज मुख्यमंत्री शाजापुर में करेंगे 8174 करोड़ रूपये की 6 औद्योगिक इकाइयों का भूमि-पूजन और लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि औद्योगिक निवेश और रोज़गार सृजन हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। नए उद्योगों की स्थापना से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई और निर्णायक गति मिल रही है। प्रदेश में औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए लगातार हो रहे प्रयासों की कड़ी में मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को शाजापुर के मक्सी में स्थित दशहरा मैदान से 8,174 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली 6 औद्योगिक इकाइयों का भूमि-पूजन एवं लोकार्पण करेंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ अपरान्ह 2 बजे होगा।मुख्यमंत्री डॉ. यादव शाजापुर में 384 करोड़ रूपये की लागत से बनने वाले 4-लेन मक्सी मार्ग और मक्सी क्षेत्र शहरी मार्ग का भी शिलान्यास करेंगे। इन विकास कार्यों से अवसंरचना निर्माण और परिवहन सुगमता के साथ ही औद्योगिक गतिविधियों को बल मिलेगा। इससे क्षेत्र में विकास के साथ अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी।

बीजेपी ने छिंदवाड़ा, निमाड़, मंदसौर नए संभाग बनाए

भोपाल (नप्र)। बिहार विधानसभा चुनाव से फ्री होते ही एमपी बीजेपी संगठन विस्तार में जुट गई है। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने 3 नए संभाग बनाते हुए 13 संभागीय प्रभारी घोषित किए हैं। उनमें नागदा खाचरोद से विधायक डॉ. तेज बहादुर सिंह को भोपाल संभाग का प्रभारी बनाया है। प्रदेश उपाध्यक्ष रणवीर सिंह रावत इंदौर संभाग के प्रभारी बनाए गए हैं।

सागर सांसद और प्रदेश महामंत्री लता वानखेड़े को उज्जैन, राज्यसभा सांसद और प्रदेश महामंत्री सुमेर सिंह सोलंकी को छिंदवाड़ा, प्रदेश महामंत्री राहुल कोठारी को जबलपुर, प्रदेश महामंत्री गौरव रणदिवे को सागर, प्रदेश उपाध्यक्ष निशांत खरे को ग्वालियर, अभय यादव को चंबल, विजय दुबे को रीवा, गौरव सिरोठिया को शहडोल, प्रदेश उपाध्यक्ष कांत देव सिंह को नर्मदापुरम, प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा को निमाड़ और सुरेश आर्य को मंदसौर संभाग का प्रभारी बनाया गया है।

छिंदवाड़ा को अलग संभाग बनाया- कमलनाथ का गढ़ रहे छिंदवाड़ा को जबलपुर संभाग से अलग कर बीजेपी ने संगठनात्मक संभाग बनाया है। उज्जैन से मंदसौर को अलग किया गया है। इंदौर से निमाड़ को अलग कर नया संभाग बनाया है। बीजेपी संगठन का तर्क है कि इससे कामकाज और निगरानी में आसानी होगी।

भोपाल में घर से छप रहे थे नकली नोट

आरोपी बोला- प्रिंटिंग प्रेस में काम का अनुभव है, 2.25 लाख के जाली नोट मिले

भोपाल (नप्र)। भोपाल पुलिस ने घर में नकली नोट छापने वाले युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी से 2.25 लाख रुपए कीमत के जाली नोट और नोट बनाने के सामान मिले हैं। युवक प्रिंटिंग प्रेस में काम कर चुका है और उसी अनुभव का इस्तेमाल कर घर में नोट छाप रहा था। पुलिस यह जांच कर रही है कि वह कब से नकली नोट तैयार कर रहा था और किन लोगों तक पहुंचा चुका है। एडिशनल डीसीपी गौतम सोलंकी के मुताबिक, शुक्रवार शाम करीब 4 बजे सूचना मिली कि शांति नगर झुग्गी बस्ती के पास एक युवक नकली नोट चलाने की फिराक में घूम रहा है। पुलिस ने घेराबंदी कर उसे पकड़ लिया। तलाशी में उसके पास से 500 रुपए के 23 नकली नोट बरामद हुए। आरोपी ने अपना नाम विवेक यादव (निवासी मुरली नगर, करोंद) बताया।

असली जैसा नोट छापने ऑनलाइन स्टडी की- आरोपी विवेक ने पुलिस को बताया कि वो 10वीं पास है, लेकिन प्रिंटिंग की जानकारी के चलते उसने नकली नोट प्रिंट करने की प्लानिंग की, उसने नकली नोट छापने के लिए कई राइटर्स की किताबें पढ़ीं। अलग-अलग जगह से ऑनलाइन अध्ययन किया फिर ऑनलाइन ऑर्डर कर मटेरियल जुटाया और नकली नोट छापने लगा।

घर में छाप रहा था नकली नोट

पुलिस पूछताछ में विवेक ने बताया कि वह अपने ही घर में कम्प्यूटर और प्रिंटर की मदद से नकली नोट छाप रहा था। वह प्रिंटिंग प्रेस में काम कर चुका है, इसलिए उसे डिजाइनिंग और प्रिंटिंग का अनुभव है। इसका इस्तेमाल जाली नोट छापने में कर रहा था।

2 लाख 25 हजार 500 रुपए बरामद- आरोपी की निशानदेही पर पुलिस उसे उसके घर लेकर पहुंची।

गौरव और आत्मसम्मान के प्रतीक हैं भगवान बिरसा मुंडा : राज्यमंत्री गौर

श्रीमती गौर ने भोपाल में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में की सहभागिता

भोपाल(नप्र)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि अमर सेनानी, महानायक भगवान बिरसा मुंडा गौरव और आत्मसम्मान के प्रतीक हैं। धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा ने अपने अदम्य साहस, संघर्ष और श्रेष्ठ कर्मों से जन-जन के हृदय में अमिट छाप छोड़ी है। उनके जीवन से युवाओं को निरंतर प्रेरणा मिलती है। वह असाधारण व्यक्तित्व थे, जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर भोपाल के एकलव्य आवासीय परिसर में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर आयोजित जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम को संबोधित कर रही थीं।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा ने मात्र 25 वर्ष की उम्र में देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देकर युवाओं को अद्वितीय संदेश दिया। उन्होंने आदिवासी समाज को जल, जंगल और जमीन के अधिकार दिलाने के लिए अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचारों के विरुद्ध सशक्त संघर्ष किया। बचपन से ही अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की चेतना उनमें जागृत हो चुकी थी। केवल 15 वर्ष की आयु में उन्होंने जनजातीय समाज के सम्मान और अधिकारों की रक्षा हेतु आंदोलन प्रारंभ किया।

भोपाल में चलती लाल बस में आग लगी

बस के ड्राइवर-कंडक्टर ने कूदकर बचाई जान, सवारियों को भी बचाया

भोपाल (नप्र)। भोपाल की सड़कों पर उस समय अफरा-तफरी का माहौल देखने को मिला, जब भोपाल सिटी लिंक लिमिटेड (बीसीएलएल) की लो फ्लोर रेड बस में आग लगने की घटना होते-होते बच गई। पूरा मामला भोपाल के लिंक रोड नंबर-1 का है, जहां बोर्ड ऑफिस चौराहे से न्यू मार्केट की ओर जा रही लो फ्लोर बस से अचानक धुआं निकलने लगा। बस में आग लगते ही ड्राइवर-कंडक्टर कूद गए। इसके बाद सवारियों को भी उतारा गया।घटना शनिवार सुबह की ही है। बस लगातार सड़क पर दौड़ रही थी, लेकिन समय रहते चालक और यात्रियों की सतर्कता से धुएं को काबू कर लिया गया। घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। यह बस टीआर-4 रूट पर बैरागढ़ से एम्स तक संचालित होती है। बता दें कि बीसीएलएल की बसों की खराब हालत को लेकर सवाल उठते रहे हैं। अधिकारियों ने घटना की जांच शुरू कर दी है।

बस में 8 से 10 सवारियां बैठी थी- नगर निगम में एमआईसी मेंबर मनोज राठौर ने बताया कि मामला शनिवार सुबह का ही है। बस बोर्ड ऑफिस की ओर से जा रही थी। तभी पिछले हिस्से में शार्ट सर्किट की वजह से धुआं निकलने लगा। तुरंत बस को रोककर काबू पाया गया। बस में 8 से 10 सवारियां बैठी थी, जो सुरक्षित है। बस के सभी दस्तावेज पूरे है। फिर भी जांच करवाई जा रही है।

- **भोपाल में पब्लिक ट्रांसपोर्ट के बुरे हाल-** बता दें कि भोपाल में पब्लिक ट्रांसपोर्ट के बुरे हाल है। एक समय कुल 368 बसें सड़कों पर दौड़ रही थी, लेकिन बाद में बसें बंद होने लगी और अब इनकी संख्या 60 पर आ गई।
- **चार एजेंसी संभाल रही थी बसों की व्यवस्था-** भोपाल में पब्लिक ट्रांसपोर्ट के रूप में सिटी बसों का संचालन बीसीएलएल के जरिए 4 एजेंसी कर रही थी। इनमें मां एसोसिएट्स, एपी मोटर्स, श्री दुर्गांबा और आई-मोबिलिटी एजेंसी शामिल हैं। ये एजेंसियां 25 रूट पर बसें चला रही थी। इनमें से सबसे पहले पिछले साल 4 जुलाई को मां एसोसिएट्स ने 149 बसों का संचालन बंद किया था। इसकी वजह इन बसों में टिकिट कलेक्शन करने वाली एजेंसी चलो एप की ओर से प्रति किमी दी जाने वाली राशि घटाने की मांग है, लेकिन डेढ़ साल बाद भी बीसीएलएल और निगम के जिम्मेदार इस समस्या का समाधान नहीं निकाल पाए।
- **निगम कमिश्नर ने 16 नई बसें चलवाई-** परिषद में आसंदी से निगम कमिश्नर को बसों का संचालन करने के निर्देश दिए गए। इसके बाद कमिश्नर जैन ने पहल की और बस ऑपरेटर फर्म मेसर्स इंक्यूबेट सॉफ्टटेक को शीघ्रता से आरटीओ संबंधी समस्याओं के निराकरण करने, फिर बसों का संचालन पुनः प्रारंभ करने को कहा। ऑपरेटर फर्म ने भी आरटीओ में बकाया टैक्स की राशि एवं परमिट संबंधी समस्याओं का निराकरण कर सीएनजी बसों का संचालन प्रारंभ करते हुए टीआर-4 रूट पर 16 बसें शुरू कर दी।

उप मुख्यमंत्री ने मनकामेश्वर महादेव मंदिर के निर्माण कार्य का किया निरीक्षण

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने रीवा में कोठी कंपाउण्ड स्थित मनकामेश्वर महादेव मंदिर के पुर्नरूद्धार कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने निर्माण कार्य में संलग्न एजेंसी को गुणवत्तापूर्ण ढंग से शीघ्र कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए।

शामगढ़ में 40 एमवीए क्षमता का अतिरिक्त पॉवर ट्रांसफॉर्मर स्थापित:ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

मंदसौर जिले की पारेषण क्षमता में हुई बढ़ोतरी

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि मंदसौर जिले की पारेषण व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण करते हुए मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) ने 132 केवी सबस्टेशन शामगढ़ में एक 40 एमवीए क्षमता का अतिरिक्त पॉवर ट्रांसफॉर्मर स्थापित कर इसे ऊर्जीकृत किया है। इससे सब-स्टेशन में अतिरिक्त पॉवर ट्रांसफॉर्मर की उपलब्धता के साथ-साथ शामगढ़ तहसील क्षेत्र के 21 हजार विद्युत उपभोक्ताओं को निर्बाध और गुणवत्तापूर्ण बिजली मिलेगी। इस ट्रांसफॉर्मर से सब-स्टेशन की क्षमता 40 एमवीए से बढ़कर अब 80 एमवीए हो गयी है।

मंदसौर जिले की पारेषण क्षमता में वृद्धि

एमपी ट्रांसको के अधीक्षण अभियंता वाय. आर. मांडलेकर ने बताया कि इससे मंदसौर जिले के चंदवासा, शामगढ़ तथा लिफ्ट इरीगेशन फीडर के साथ 17000 घरेलू, 4000 सिंचाई एवं 3 हाई टेंशन उपभोक्ताओं को फायदा मिलेगा।

मंदसौर जिले में एमपी ट्रांसको के कुल 12 एक्स्ट्रा हाई टेंशन सब-स्टेशन हैं, जिनकी कुल क्षमता 2559 एमवीए से बढ़कर 2599 एमवीए की हो गई है।

कहानी

पल्लवी सक्सेना

अटूट बंधन

देवभूमि उत्तराखंड के हिमाचल प्रदेश में बसे एक छोटे से गाँव की कहानी सुंदर नदियों, पहाड़ों, झरनों और जंगलों से घिरा एक छोटा सा गाँव जो प्राकृतिक सुंदरता के साथ साथ मंदिरों में सुबह शाम होने वाली आरती पूजन एवं मंत्र उच्चारण आदि से गूंजने वाली पवित्र ध्वनियों से परिपूर्ण था. जहाँ के लोग आज भी 'सो कॉल्ड सोशल मिडिया' और आभासी दुनिया से कोसो दूर थे. हालांकि कहने वाले या यूँ कहें कि देखने वालों की नजरों में यह पिछड़े पन की निशानी है. लेकिन वहां के वासियों के लिए उनकी यही आदत, यही अछूता पन उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं है. उनकी यही खासियत उन्हें औरों से भिन्न बनाती है. भले ही वह लोग पिछड़े हों. लेकिन मानवता उनके अंदर अब भी जगमगाती है. परिवार की खुशियों में सा परिवार शामिल होना और अपनी पुरानी परम्पराओं के अनुसार अपने रीती रिवाजों की धरोहर लिए अपने सारे धार्मिक एवं सामाजिक अनुष्ठानों को निभाना ही उनकी मूल पहचान है. आधुनिकता का जहर अभी तक वहां की मिट्टी में घुल नहीं पाया है और शायद इसलिए ही उन्होंने अपनी संस्कृति को बचा के रख पाया है. वरना आधुनिकता की आंधी उन्हें भी अपने साथ लेकर कब की बाहा ले गयी होती।

उसी गाँव में एक बहुत पुराना प्राचीन मंदिर था. जहाँ विराजमान देवी में उन गाँव वालों की ऐसी आस्था थी कि जिसके लिए उसे अंध भक्ति भी कहा जा सकता है. लेकिन आस्था की कोई निश्चित परिभाषा नहीं होती और शायद इसलिए ही उन गाँव वालों के लिए उनके प्राणों से भी अधिक महत्व उन देवी का था. उन देवी पर एक ऐसा अटूट विश्वास जो आज केवल प्राचीन किस्से कहानियों और किताबों में ही देखने को मिलता है. खैर आज उस गाँव में कुछ मुट्ठी भर लोग ही बचे है. जहाँ कुछ छोटी -छोटी हर तरह की दुकानें है, जहाँ शादी ब्याह से लेकर रोजमर्रा का सभी सामान बिकता है. हाथों से बनी सुन्दर सुंदर चीजे बिकती है जैसे टोकरियां मिट्टी के बर्तन बांस आदि से बनी चीजे इत्यादि और कुछ छोटे मोटे होटल भी है जहाँ लोग परिवार के साथ सामाजिक उत्सव जैसे शादी ब्याह, जन्मदिन, आदि का उत्सव मनाते है। ऐसे ही एक उत्सव में कोई अपने समस्त परिवार के साथ खुशियाँ माना रहा था. किसी का नया नया ब्याह हुआ था, तो किसी घर संतान का आगमन, किसी को अपनी मेहनत और ईमानदारी के बल पर धन प्राप्त होने की खुशी थी, तो किसी को नया घर लेने की, कोई नयी ज़िंदगी के सपने बुन रहा था, तो कोई दोस्तों संग मस्ती में झूम रहा था, हर चेहरे पर खुशी का भाव था और आने वाली नयी ज़िंदगी के लिए कुछ महत्वपूर्ण सपने, हर किसी की आँखों में एक नया जोश, एक नयी उमंग दिखायी दे रही थी. सभी एक दूसरे की खुशी में बहुत खुश दिखायी दे रहे थे. मानो सभी एक अटूट बंधन में बंधे हो जैसे ऐसे ही माहौल में श्यामा माधव से मिली. दोनों ने एक दूजे को देखा और आँखों ही आँखों में एक दूजे को पसंद कर लिया. श्यामा की सहेलियों ने यह सब देख लिया और सभी उसको छेड़ने लगी. माधव को लेकर परिहास करने लगी. श्यामा इन परिहासों से लजा जाती, मंद मंद मुसकुराने लगती, उसकी आँखों ने भी अब माधव के स्वप्न देखना प्रारम्भ कर दिया था. पिया मिलन की आस का एक नन्हा सब दीप अब उसके मन मंदिर में जलने लगा था. जिसकी लौ अब धीरे -धीरे समय के साथ साथ बढ़ती चली जा रही थी।

उधर माधव के मन में भी श्यामा के लिए प्यास जगने लगी थी. दोनों गाँव के बाहर पहाड़ों में, तो कभी नदी किनारे, कभी किसी झरने के पास मिलने लगे थे. फिर एक दिन गाँव के ही एक मूल निवासी ने उन्हें एक साथ विचरण करते देख लिया और गाँव के मुखिया को जाकर खबर कर दी. मुखिया जी क्रोध से तिलमिला उठे क्यूंकि श्यामा और कोई नहीं बल्कि उनकी अपनी ही इकलौती बेटी थी. उन्होंने अपने कुछ विश्वास पत्रों से आँखों ही आँखों में उसे लाने को कहा।

उनके वह विश्वास पात्र गए और जोर जबरदस्ती से श्यामा को माधव से अलग कर ले आये. श्यामा अपने पिता के ऐसे व्यवहार को देख मन ही मन बहुत डर गयी. सरपंच जी ने लोक लाज के डर से उस पर पहरा बिठा दिया, ताकि वह फिर दुबारा घर से बाहर जाकर माधव से ना मिल सके. पिता के ऐसे व्यवहार से श्यामा बहुत दुखी रहने लगी. उसका सदाबहार जैसा खिला खिला चेहरा अब मुरझा सा गया था।

उधर जब माधव ने देखा कि बहुत दिन हुए श्यामा उससे मिलने नहीं आयी तो वह समझ गया कि हो ना हो श्यामा के पिता जी ने ही उस पर प्रतिबन्ध लगा दिए होंगे. ऐसा विचार मन में धारण कर जब माधव छिपते छिपाते श्यामा से मिलने पहुँचा तो पहले तो माधव को देखते ही श्यामा का मन मयूर नाच उठा. लेकिन फिर दूजे ही पल उसके मन पर पिता के डर की छाया आना पड़ी और उसने माधव से वहां से तुरंत चले जाने के लिए कहा. किन्तु लाख समझाने पर भी जब माधव ना माना, तो श्यामा ना कहा देखो शायद यह हमारे प्रेम की परीक्षा है इसलिए ही देवी में ने हम दोनों को अलग कर दिया है और तुम तो जानते ही हो, होगा वही जो वो चाहेंगी।

कोई माँ अपने बच्चों का बुरा नहीं चाहती प्रिय वह माँ है हमारी, वह क्यों हमारी खुशी नहीं चाहेगी भला...? माधव ने श्यामा से कहा हाँ तुम ठीक ही कह रहे हो, लेकिन हो सकता है कि माँ यह देखना चाहती हों कि 'यह सच में हमारा सच्चा प्रेम है या नहीं' कहीं ऐसा तो नहीं कि यह केवल एक आकर्षण हो और हम दोनों ने इसे प्रेम समझ लिया हो।

क्या तुम्हें सच में ऐसा लगता है, मेरे तुम्हारे बीच यह जो कुछ भी है, वह केवल एक आकर्षण मात्र से अधिक और कुछ भी नहीं...?

मैंने ऐसा कब कहा लेकिन यह असंभव भी तो नहीं, कुछ दिन ऐसे ही व्यतीत कर के देखते है. तभी शायद पता चलेगा. परन्तु अभी तुम यहाँ से जाओ. कहीं किसी ने देख लिया तो अनर्थ हो जायेगा....!

कुछ दिन...? मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं जी सकता और तुम कुछ दिनों की बात कर रही हो...? मैं सच कहता हूँ प्रिय मेरे मन में तुम्हारे प्रति यह जो कुछ भी है वह केवल आकर्षण तो नहीं है, यह एक अटूट बंधन है प्रिय, तुम देखना इसे देवता भी ठुकरा नहीं सकते। यही तो देखना है माधव मुझे नहीं बल्कि इस संसार को इसलिए चाहे जैसे भी हो, तुम्हें मुझसे दूर जाना ही पड़ेगा तुम्हें देवी माँ की कसम।माधव इसके आगे कुछ भी ना बोल सका और चुपचाप वहां से चला गया. इसी तरह कुछ दिन के बजाय कुछ महीने गुजर गए. दोनों को एक दूसरे मिले. लेकिन उनके मन में उनके उस प्रेम की वही लौ अब भी जल रही थी. इधर श्यामा के पिता ने उसकी शादी के लिए लड़का ढूंढना शुरु कर दिया. कई रिश्ते आये गए. श्यामा ने सब को अपने मन की बात बताकर मना कर दिया. ऐसे में तंग आकर एक दिन श्यामा के पिता जी ने समस्त गाँव वालों के साथ उसे और माधव को देवी के मंदिर में ले जाकर खड़ा कर दिया और देवी के सामने हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की, कि हे देवी माँ यदि आप इन दोनों के रिश्ते के लिए सहमति देती है तो कोई इशारा दे. मैं इसी मंदिर में इनका विवाह सम्पन्न करवा दूंगा. लेकिन सम्पूर्ण समाज में, अपनी बिरादरी में, मैं अपने परिवार की बदनामी होते नहीं देख सकता। कुछ ही देर में देवी के गले में लटकी पुष्प माला सरपंच जी के हाथ में आ गिरी सरपंच जी की आँखों में जल भर आया. यह नजारा देख, गाँव वाले भी भाव विभोर हो उठे. श्यामा और माधव ने भी बड़ी ही प्रसन्नता के साथ पुलकित मन से माँ को प्रणाम किया. खूब जोर शोर से शादी की तैयारियां होने लगी. पूरे गाँव को फूलों और दीपों की दीप माला से सजा दिया गया. लोक गीत और बन्ने बन्नी के गीत गाये जाने लगे. पुरी मान मर्यादा के साथ हल्दी और मेहंदी की रस्म की गयी. अभी श्यामा के हाथों में मेहंदी लगे एक घंटा भी नहीं हुआ था और वो अपनी मेहंदी दिखाने माधव के पास पहुँची ही थी कि देखो मेरी मेहंदी कितनी सुंदर लग रही है ना ? जल्दी से देख लो नहीं तो फिर इस पर पट्टी बांध दी जाएगी। अभी श्यामा अपनी बात पूरी भी नहीं कर पायी थी कि बहुत जोरों कि गड़गड़ाहट के साथ बिजली चमकती है और फिर अचानक उन पहाड़ियों में बादल फट जाने के कारण इतने जोर की बारिश हुई कि किसी को सँभालने का मौका ही नहीं मिला और पूरा का पूरा गाँव बाढ़ में बह गया. बहुत से लोग कुचलकर मर गए, कितने ही पानी के बहाव में बह गए, और कितने ही परिवार इमारतों के मलबों में दबकर मर गए. किसी का कुछ पता नहीं चला. जगह जगह घरों में पानी और किंचड़ भर गया जिसके कारण बहुत से लोगों का अपने ही घरों में दम घुट गया. मौत का ऐसा तांडव हुआ जो पहले ना कभी किसी ने देखा था ना कभी सोचा था। कुछ ही क्षण में खुशी का माहौल मातम में बदल गया. पूरा के पूरा गाँव बह गया. शेष रह गया तो केवल उस देवी का मंदिर और जाँच पड़ताल करने वालों ने केवल कुछ ही लोगों के मरने की बात की और हजारों की संख्या में लोग लापता है. ऐसा कहकर इतनी बड़ी आपदा को उन्होंने केवल मात्र एक समाचार बना दिया. बारिश के शांत होने के बाद जब प्रशासन द्वारा सफाई अभियान और गुमशुदा लोगों की शिनाख्त अर्थात जांच पड़ताल हेतु अभियान चलाया गया जिसमें जब मलबा हटाया गया तो उस मलबे में से निकली दुल्हा और दुल्हन के लिबास में सजी श्यामा और माधव की लाशें. जिसमें से श्यामा के हाथों पर चढ़ी पन्नी, जो उसकी मेहंदी के हलका सूखने के बाद चढ़ाई गयी थी ताकि उसकी मेहंदी ना छूटे और रंग गहरा आ सके. अब भी उसके हाथों में बंधी पायी गयी थी. मौत का यह मंजर देखकर किसी का भी दिल दहल जाये। उस मंजर को देखा एक बेटी के बाप ने क्यूंकि ना जाने क्यूंकि इतनी भयंकर आपदा के बाद भी देवी मां ने उनका जीवन बचा लिया था. एकमात्र वही ऐसा व्यक्ति शेष रह गए था जिसने उन दोनों की लाशों को पहचाना था. जो आज खुद गहरे सदमे के कारण अस्पताल में पड़ा शून्य में निहार रहा है. जो ना अब कुछ बोल सकता है और ना ही सुन सकता है. केवल देख सकता है और केवल एक ही दिशा में एकटक मौन देखता ही रहता है।

कविता

दीया हूं मैं

कमलेश कुमार दीवान

जल जल के बुझता हुआ दीया हूं मैं
रात के साथ ढलता हुआ दीया हूं मैं।

घेरती हैं दास्तां यूं ही ये दिन बीत रहे
पुरानी याद में पलता हुआ दीया हूं मैं।

कभी अपने तो कभी गैर मेहरबां रहे
मेहरबानी से पिघलता हुआ दीया हूं मैं।

जहां प्रार्थना अरदास है अजान के स्वर
वहीं आवाज से जलता हुआ दीया हूं मैं।

चलेंगे साथ तो साथ भी आएंगे 'दीवान '
खुशी के साथ संभलता हुआ दीया हूं मैं।

लघु कथा

अन्नपूर्णा

देवेंद्र काशिव

कॉलोनी में नवरात्रि के दौरान प्रतिदिन मां की आराधना में गरबे ,आरती और उसके पश्चात प्रसादी का वितरण होता था। अंतिम दिन महाप्रसादी के रूप में भंडारा चल रहा था। इस दौरान समिति के कुछ सदस्यों ने भोजन प्रसादी के व्यंजनों के बारे में पंक्ति में बैठे कुछ लोगों से प्रतिक्रिया जानना चाहि, तो एक कॉलोनीवासी जो पेशे से चिकित्सक थे , तो उन्होंने बताया दाल में नमक थोड़ा ज्यादा हो गया है ,दूसरे सज्जन से पूछा तो उन्होंने बताया ,चावल में तो नमक ही नहीं डला है? किंतु जब पंक्ति के अंतिम छोर पर बैठी एक वृद्ध महिला से पूछा गया तो उन्होंने बताया भाई लोग यूं तो पूरा भोजन ही एक नंबर बना है। और दाल -चावल तो बहुत ही स्वादिष्ट जैसे,साक्षात अन्नपूर्णा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बाल कहानी

प्रगति त्रिपाठी

करूणा का भाव

रचना को बचपन से ही पशु - पक्षियों से बहुत लगाव था। वह हमेशा चिड़ियों के लिए दाना - पानी रखती थी। रचना के पापा अरविंद जी बैंक मैनेजर थे और मां हाउसवाइफ थी। रचना का स्कूल घर के पास ही था। ऑफिस जाते हुए पापा रचना को स्कूल छोड़ देते थे और छुट्टी के समय मम्मी उसे घर ले आती थी। कुछ दिन पहले ही पास के मैदान में एक कुतिया ने चार- पांच बच्चों को जन्म दिया था। बड़े प्यारे - प्यारे बच्चे थे। रचना रोज मम्मी के साथ उन्हें रोटी खिलाने चली जाया करती थी। उसने एक पिल्ले का नाम टॉमी भी रख दिया था। वो बाकी बच्चों से अलग था। उजले शरीर पर काले धब्बे थे। धीरे-धीरे टॉमी उसे पहचानने लगा। एक दिन रचना मम्मी के साथ स्कूल से लौट रही थी तो सड़क के किनारे एक छोटा सा पिल्ला कुकिया रहा था शायद उसके पैर में चोट आई थी। रचना उसे देखते ही बोल पड़ी अरे..ये तो टॉमी है, इसके पैर में तो चोट लगी है और खून भी आ रहा है। मम्मी इसे जल्दी डॉक्टर के पास ले चलो।

हां बेटा, यह बेचारा तो घायल हो गया हैं।

मोहल्ले के वर्मा अंकल वहां से गुजर रहे थे। मनोरमा जी और रचना को देखा तो उनका हाल - चाल पूछने के लिए रूक गए, रचना को देखते ही बोले कैसी हो बेटा?

अंकल मैं तो अच्छी हूं पर टॉमी को पैर में चोट लगी है प्लीज इसकी हेल्प करिए, इसे डॉक्टर के पास ले चलिए।

इतनी छोटी बच्ची में करूणा भाव देखकर वो तुरंत बोले तुम घबराओ नहीं बेटा, मैं अभी इसे डॉक्टर के पास ले जाता हूं।

तुम मम्मी के साथ घर जाओ।

नहीं अंकल मैं भी चलूंगी आपके साथ। रचना जिद करने लगी।

रचना के जिद के आगे मम्मी को झुकना पड़ा और वो भी वर्मा अंकल के साथ चल पड़ी। डाक्टर ने टॉमी की मरहम पट्टी की और कहा मामूली चोट है, जल्दी ठीक हो जाएगा।

ये बात सुनकर सभी आस्वस्त हुए और टॉमी को लेकर वापस घर की ओर चल पड़े। टॉमी को वहीं मैदान में छोड़ दिया जहां उसकी मां रहती थी। इसपर रचना कहने लगी मम्मी क्या हम टॉमी को अपने घर नहीं रख सकते?

नहीं बेटा।

लेकिन क्यूं?

अच्छा एक बात बताओ बेटा, क्या तुम अपनी मम्मा के बिना रह सकती हो?

नहीं मम्मा। रचना ने मम्मी को कसकर पकड़ते हुए कहा।

फिर हम इसे इसकी मम्मी से दूर कैसे कर सकते हैं? इसकी मम्मी परेशान हो जाएगी ना!

हां वो तो है। रचना ने सोचते हुए कहा।

इसलिए इसे हम इसकी मम्मी के साथ ही रहने देते हैं। जैसे तुम टॉमी के साथ रोज खेलती थी और उसे खाना खिलाती थी वैसे ही करना। वो देखो टॉमी की मम्मी भी उसे ढूढ़ते हुए आ गई।

टॉमी को देखते ही उसकी मम्मी उसे प्यार से चाटने लगी। यह देखकर रचना मुस्कुरा उठी।

कविता

हम बच्चे

अनुपमा अनुश्री, भोपाल

देखो हमारे खिलंदड़पन को
जैसे हम हैं, वैसे क्या तुम हो!
चिंताओं को रख ताक पर
बैठते हैं हम सब सखाओं संग
खुले आसमान तले सेतु पर।

पंछियों की टोलियाँ
हमसे मिलने आती हैं
हमारे संग बतियाती हैं
इनकी बोलियाँ हमें तो पता है
क्या तुम्हें समझ आती हैं!

हम पाँच हाथों में डाल हाथ
दूर क्षितिज निहारते हैं
दूर वहाँ तक है
हमारे सपनों की उड़ान
सबको समझाते हैं।

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बुढ़ापे का बीमा

धर्मपाल जी ने तुरंत पंद्रह लाख की एफ.डी. तुड़वाकर 'ग्रैंड वेलकम' का आयोजन किया था; पकवान नहीं, मानो 'दहेज बाजार' के सैम्पल सजे थे। दीप्ति ने जैसे ही 'हाई-हील' की धमक से घर में कदम रखा, माँ-बाप दोनों ने उसे कलेजे से नहीं, अपनी 'बैंक-स्टेटमेंट' से लगाया। पिता ने तुरंत एक 'कैश फ्लो' स्टेटमेंट दी-बेटी, तुम्हें पता है? तुम्हारी 'डॉक्टरी' पर हमने अपनी आधी ज़िंदगी की 'पूंजी' फूंक दी। बेटा पैदा नहीं हुआ, इसलिए तुम्हें 'लड़की' होने के बावजूद 'पूंजी निवेश' का मौका दिया। अब 'रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट' (R.O.I.) का वक्त है। तुम्हारी 'लाइसेंस' की कीमत अब लाखों में नहीं, करोड़ों में होगी। जाओ, थोड़ी हवा खाओ, फिर 'करोड़पति दामाद' प्रोजेक्ट पर मीटिंग है। दीप्ति के चेहरे पर, 'एम.बी.बी.एस.' की थकान से ज़्यादा, 'पिताजी के खर्च' का हिसाब तैर रहा था।

हँसी-ठिठोली? वाहियात! धर्मपाल जी के घर में हँसी-ठिठोली नहीं, सिर्फ 'प्रॉफिट एंड लॉस' पर बात होती थी। दो दिन बाद, धर्मपाल जी ने अपने 'आर्थिक सलाहकार' (खुद) की भूमिका में दीप्ति को 'बोर्ड मीटिंग' के लिए बुलाया। सिर पर हाथ फेरकर, जो स्नेह नहीं, बल्कि 'इन्वेंटरी' का हिसाब-किताब था, बोले, देखो बेटी, तुम्हारी माँ और मेरे 'एक्सपायरी डेट' करीब है। अब 'फाइनल सेटलमेंट' करना है। तुम्हारी शादी, सिर्फ शादी नहीं है; यह 'परिवार के ऋण' को चुकाने की सबसे बड़ी 'किस्त' है। मैं अपनी सबसे बड़ी 'देनदारी' (तुम्हें) को जल्द से जल्द 'समाप्त' करना चाहता हूँ, ताकि शांति से मर सकूँ। उन्होंने तुरंत 'प्रस्ताव' पेश किया- बताओ! कॉलेज में कोई 'माल' फँसाया था क्या? कोई ऐसा 'सहपाठी' जो डॉक्टर होने के साथ ही 'अमीरों का लड़का' हो? जिसे तुम दोनों ने 'पसंद' किया हो? देखो, बेटा! 'पसंद' का मतलब है, जो 'डॉक्टर' भी हो और जिसके पास 'अपनी कोठी' भी हो। हमें तुम्हारी 'प्रेम कहानी' से नहीं, उसके 'नेट वर्थ' से मतलब है। कह दो, हम तुरंत 'सहमति की मुहर' (NOC) दे देंगे। दीप्ति, जिसने किताबों के सिवा कुछ नहीं देखा था, 'कॉलेज रोमांस' की बात सुनकर जैसे ज़मीन में गड़ गई। उसका 'इमोशनल बैंक बैलेंस' तुरंत 'जीरो हो गया। यह 'प्रेम' नहीं, 'पूंजी चांस' के तौर पर, पिता ने फिर से 'इंटरव्यू' लिया। बेटी, संकोच मत करो, यह 'ऑफर लिमिटेड टाइम' के लिए है! बताओ, कहीं 'गरीब' डॉक्टर तो नहीं फँसा लिया? कोई 'अछूत' तो नहीं? दीप्ति ने फिर वही 'भयानक' जवाब दिया। अब, 'सभ्यता' का बाँध टूट

गया। धर्मपाल जी, जो कल तक 'प्यार' का नाटक कर रहे थे, एकदम 'जज' की मुद्रा में आ गए, मानो कोर्ट में 'फैसला' सुना रहे हों। वह दहाड़े, तुम्हें 'पढ़ाना' हमारी सबसे बड़ी 'गलती' थी! तुम तो 'नकारा', 'गैर-जिम्मेदार' और 'अयोग्य' निकली! इतनी महंगी 'एजुकेशन' पर खर्च किया, लाखों रुपया फूँका, और तुम एक अदना सा 'करोड़पति लड़का' भी अपने 'प्रेम जाल' में फँसा नहीं पाई! धिक्कार है तुम्हारी डॉक्टरी पर! धिक्कार है तुम्हारी 'सफलता' पर! क्या करेंगी तुम्हारी यह 'एम.बी.बी.एस.' जब तुम 'रिश्ते' नहीं 'खरीद' सकतीं? यह 'क्रोध' नहीं था, यह था 'पूंजी निवेश' पर 'जीरो रिटर्न' का गुस्सा। बेटी नहीं, उन्हें 'फेल हुआ स्टॉक' दिख रही थी।

पिता के ये 'घोषणा-पत्र' सुनकर दीप्ति का दिल नहीं, बल्कि उसका 'आत्म-सम्मान' तार-तार हो गया। उसकी आँखों से जो आँसू बह रहे थे, वे 'दुःख' के नहीं, बल्कि 'घृणा' और 'निराशा' के थे। उसने सोचा, वाह रे मेरे पिता! जिस 'योग्यता' के लिए मैंने दिन-रात एक किए, वह 'डिग्री' आज मेरे 'गैर-जिम्मेदार' होने का प्रमाण बन गई। उनके मापदंडों पर खरा उतरने के लिए मुझे 'चरित्र' नहीं, 'चालबाज़ी' सीखनी चाहिए थी! मुझे 'अध्ययन' की जगह 'शिकार' करना चाहिए था! उनकी नज़र में, एक 'सफल डॉक्टर' नहीं, बल्कि 'असफल शिकारी' खड़ी थी। दीप्ति ने मन ही मन एक 'संकल्प' लिया, एक ऐसा कड़वा संकल्प जो उस क्षण की पूरी 'पीड़ा' को समेटे हुए था- मैं अपने पिता के 'मापदंडों' पर, यानी 'डॉक्टर-पति' के साथ 'करोड़पति' के जाल में फँसने के 'मापदंड' पर, कभी खरी नहीं उतर सकती! अब चाहे मुझे अपनी 'एम.बी.बी.एस.' की डिग्री को गले लगाकर, पूरी ज़िंदगी 'अविवाहित' ही क्यों न गुजारनी पड़े। मेरा 'ज्ञान' मेरी 'कीमत' तय करेगा, कोई 'लड़का' नहीं। मैं 'गैर-जिम्मेदार' हूँ, तो हूँ! कम से कम, मैं 'बिकाऊ' तो नहीं हूँ! यह व्यंग्य, पिता पर नहीं, बल्कि 'समाज' की उस सोच पर था, जो बेटी की 'सफलता' को 'दहेज' की चाबी से तौलती है, और जहाँ 'अविवाहित' रहना भी 'अयोग्यता' का सबसे बड़ा प्रमाण बन जाता है।

थियोदोर रूसो, शार्ल दोबिन्यी और बार्बिजाँ

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

मैं और बस मैं की हवा चल रही हो जैसे। गांव के धूल भरी गलियों के, हंसी ठिठोलियों के बीच स्कूल जाने से भी पूर्व यानी गदहिया गोल में भी नाम लिखे जाने से पूर्व कलाकृतियां बनाने वाले बालक सुनील विश्वकर्मा जो आज डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा के रूप में वैश्विक पटल पर अपनी पहचान बनाये हुए हैं, कला को लेकर इसी अमूर्तन और यथार्थ के बीच उठे उहापोह में पिस रहे थे लेकिन गांव की महक कहें या बचपन के संस्कार और गुरु विश्वनाथ त्रिपाठी जी द्वारा दी गई शिक्षा का असर कि सुनील जी यथार्थता की तरफ ही बढ़े और इस तरह बढ़ें कि कृतियों में भव्यता अपने पूरे वजन के साथ उपस्थित हुई है। दिव्यता हर कृतियों में हैं और फिर वो चाहे रंग में हो, रेखा में हो या फिर आकृतियों में। सृजन रग-रग में बसा है आपके। यथार्थ के नजदीक आप शुरू से ही रहे हैं। वस्तुओं, परिस्थितियों, समाज एवं संस्कार को अच्छे से महसूस करते हैं आप, जो कृतियों में स्पष्टतः झलकती भी है।

प्रकृति का सानिध्य सभी को भाता है और सभी अपने-अपने विधा में, किसी न किसी रूप में प्रकृति का प्रयोग करते हैं, प्रकृति की अनुकृति करते हैं। कला भी हमेशा से प्रकृति के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है हाँ कभी-कभी कुछ विशेष वाद के कारण कुछ कलाकार प्रकृति से दूर, कुछ इतर करने का प्रयास भी करते हैं, पर जिस प्रकार बिना भोजन जीवन मुश्किल है ठीक वैसे ही प्रकृति बिना कई काम मुश्किल है। कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। प्रत्यक्ष न सही अमूर्त या आधुनिक रूप में ही सही पर प्रकृति का होना अनिवार्य सा है लगभग हर कृतियों में। ऐसा कोई भी मूल नहीं है जिसका प्रयोग कृतियों में किया जाय और वो प्रकृति में ना हो। कुछ कलाकार तो ऐसे भी हुए जो प्रकृति को मानवीय भावनाओं की भांति गहराई तक उतर कर नाजुक और संवेदनशील अवस्था में उनका अंकन करते हैं, निर्जीव में भी सजीवता, जीवटता प्रदर्शित होने लगती है। कृतियों को देखकर दर्शक भावविभोर हुए बिना नहीं रह सकते। कलाकार शार्ल दोबिन्यी ऐसे ही कलाकारों में थे जो नाव पर यात्रा करके कृतियों का निर्माण किया करते थे, जिन्हें जंगलों से ज्यादा नदियों के किनारों ने आकर्षित किया, जिनके कृतियों में खेत झोपड़ियाँ गायें, बत्तख, हरे-भरे जंगल और इस परिवेश में अपने कार्य में लीन लोग हैं।

बार्बिजाँ गाँव जो फाँतेनब्लो वन के सीमा पर बसा हुआ था, कुछ कलाकारों को वहाँ का दृश्य इतना पसंद आया कि वहीं के होकर रह गये और चित्रकारी में रमे रहें। दोबिन्यी भी ऐसे ही कलाकारों में से थे।

चित्रकारी परिवेश में पले बढ़े कलाकार शार्ल दोबिन्यी बार्बिजाँ कलाकारों में सबसे अधिक प्रसिद्धि प्राप्त करने में सफल रहे, इनका जन्म पेरिस में 15 फरवरी, 1817 में हुआ था। पिता, चाचा और चाची के कलाकार होने का असर इनके कलाकार जीवन पर भी पड़ा शुरुआती कला यात्रा पारंपरिक शैली में रही पर जल्दी ही बाहर की यात्रा और बार्बिजाँ में बसने के चलते उनके कला में परिवर्तन देखने को मिला और वे प्रकृति के दुलारे एवं संवेदनशील कलाकार बन गये।

पेरिस के परिदृश्य पर लगातार काम करते रहने वाले कलाकार दोबिन्यी कई बार अपने चित्रों को सैलून में प्रदर्शित कर पाने में असफल रहे पर प्रकृति और बार्बिजाँ को लेकर उनके मन में प्रेम कम नहीं हुआ हालांकि परिवार चलाने हेतु एचिंग, वुडकटिंग, प्रिंटमेकिंग, लिथोग्राफी भी करनी पड़ी, बाद में इन माध्यमों के काम भी काफी प्रसिद्ध हुए। आप इस बीच भी लगातार सक्रिय रहे। बाद में आप की कृतियाँ कई वर्षों तक निरंतर सैलून में प्रदर्शित हुई। फ्रांसीसी सरकार द्वारा लीजन ऑफ ऑनर के अधिकारी के रूप में भी आपको नामित किया गया था। कलाकार थियोडोर रूसो, जूल्स डुप्रे, क्लोद मोने, पॉल सेजान, पॉल देलारोस और ग्युस्ताब कुर्बे जैसों से परिचित होने के बाद आपके कृतियों में समय-समय पर और भी परिवर्तन देखने को मिले। जिनेवा में भी आपके स्केचिंग की बात है। स्टूडियो के जैसे बनायी गयी नाव बार्ज ले बोटिन खरीदने के बाद आप उसमें यात्रा के दौरान भी कृतियों के सृजन में लगे रहे फलतः सीन, ओइस नदी और उनके किनारे के स्थान आपके पसंदीदा कला स्थान बन गये, पेंसिल से बना चित्र 'द बोटिन' जिस पर बैठकर ये कृतियाँ बनाते थे बहुत ही स्ट्रोकफुल बन पड़ा है। नाव के और भी कई चित्र बड़े ही सुन्दर हैं।

1866 तथा 67 में सैलून जूरी के सदस्य के रूप में दोबिन्यी युवाओं को आगे लाने हेतु सक्रिय भूमिका में रहें। कुछ समय तक इंग्लैंड के दौरे पर रहे दोबिन्यी 1870 में वहाँ चल रहे एक युद्ध के कारण वापस लौट आये। कैमिल कोरो से मित्रवत व्यवहार के साथ ही कलाशिक्षा की बात भी सामने आती है।

इनके कृतियों में चमकदार रोशनी से नहाई सुबह है और उसी सुबह में रंगों से भीगे नदी में नहाते बत्तख हैं, दोपहर की तपिश है, अलसाई अवस्था में शाम है, फैलता, छिटराता आसमान है जो अपने में समेट लेना चाहता है पूरा सूर्य। सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच का बदलता सुनहरा रंग है जहाँ चमक और सूप्त का अंतर स्पष्ट है, जहाँ प्रकृति को महसूसते हुए अंकित करने का प्रयास है, जहाँ प्रकृति के हर रंग को देखा जा सकता है, महसूस किया जा सकता है। द फार्म, कैनवास पर तैल, स्टूडियो आन द बोट, एचिंग, पुल विथ डीयर, एचिंग जैसी कृतियों के कलाकार, प्रकृति के संवेदनशील कलाकार दोबिन्यी 21 फरवरी 1878 को सदा के लिए इस देह को त्याग चले।

अक्सर कलाकारों का प्राचीन कला शैलियों से ठन जाता है फलतः कभी तो बहुत कुछ नया मिल जाता है पर कभी-कभी खो जाने का डर भी बना रहता है। नवशास्त्रीयतावादी, रोमांसवादी, यथार्थवादी एक दूसरे पर नुक्ताचीनी में व्यस्त थे उधर बार्बिजाँ गाँव जो फाँतेनब्लो वन के सीमा पर बसा हुआ था, में कुछ कलाकार प्रकृति के सान्निध्य में, जो शायद पहली दफा हो रहा था, चित्रकारी में रमे हुए थे। जिनके विषय हरे-भरे जंगल, खेत झोपड़ियाँ, गायें, बत्तख और खेती में मशगूल किसान थे। रूसो तथा दोबिन्यी बार्बिजाँ के प्रमुख कलाकारों में थे। इनकी कलाकृतियाँ यथार्थवादी थीं पर प्रकृति आदर्श रूप में न होकर नैसर्गिकता लिए हुए थी, प्रकृति की आंतरिक सुंदरता ही बार्बिजाँ कलाकृतियों की थाती है। जैसा कि आम है विरोध भी हुआ, गँवार तक का तमगा मिला, पर हुआ वही जो यहाँ के कलाकारों का समूह चाहता था। धीरे-धीरे इन सभी की कलाकृतियाँ चयनित भी होने लगीं और पुरस्कृत भी हुईं। प्रकृति को मुख्य विषय के रूप में वो भी सामने बैठ कर बिना किसी कृतिम प्रभाव के बनाना बार्बिजाँ कलाकारों की उपलब्धि है। शांति, सुकून नैसर्गिक सौंदर्य के तलाश में कुछ कलाकारों का बार्बिजाँ गाँव आना हुआ, कुछ कलाकार यहीं के हो गये तो कुछ समय-समय पर कृतियों के निर्मिती हेतु यहां आते रहे। बार्बिजां गांव होने के कारण यहाँ आकर समूह में कार्य करने वाले उस समय के लगभग सभी कलाकारों को बार्बिजाँ कलाकार कहा गया। कुछ कलाकार प्रकृति को फलक पर इतने गहराई के साथ अंकित किये हैं कि चकित हुए बिना नहीं रहा जा सकता, कलाकार थियोदोर रूसो ऐसे ही कलाकारों में थे जो प्रकृति को महसूसते हुए अपनी तूलिका चलाते थे। निर्जीवता में भी सजीवता के दर्शन किया करते थे कलाकार रूसो। छाया-प्रकाश पर विशेष प्रकाश तो नहीं था पर प्रकृति पर इतना बारीक अध्ययन कि कृति बोल उठे कि अभी हवा चलेगी और पत्ते आ गिरेंगे हमारे हाथों पर?। 15 अप्रैल 1812 में पेरिस में जन्में कलाकार रूसो का दाखिला बोर्डिंग स्कूल में हो तो गया था, पर वो कला के हो चुके थे, समय-समय पर चाचा का सानिध्य मिलता रहा। रूसो शांत प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, भावुक भी थे। यात्रा और यात्रा में स्केच करना उन्हें बेहद पसंद था।

युवावस्था आते-आते अचानक से रूसो कला की दुनिया में एक लम्बी छलाँग लगाते हुए बहुत अच्छा करने लगे थे कुछ सालों तक इनके कृतियों का चयन भी अकादमियों में होता रहा पर अच्छा समय ज्यादा दिनों तक साथ न दे सका और कई ऐसी घटनाएं जो मन को खरोंच जाती हैं, रूसो के साथ घटीं। कृतियों को लेकर कई मौकों पर हताशा, पारिवारिक उलझन, तमाम नकारात्मक घटनाओं का असर उनके सेहत पर भी दिखा जो अंत तक बना रहा। कमरे में कम जगह होने के कारण बड़े कैनवास पर कार्य करना थोड़ा मुश्किल था पर मित्रों के सहयोग से बड़े कार्य भी संभव हो सके। अकादमियों से कई दफा निराश होने के बावजूद शुभचिंतकों द्वारा कृतियों का प्रर्दशन किया गया, कला समीक्षकों द्वारा कृतियों पर गहराई से चिंतन हुआ, लोग इनके कृतियों से रूबरू हुए, कृतियां पसंद की गई, परिणामतः अकादमी में इनके कृतियों का चयन पुनः शुरू हुआ बाद में आप जूरी अध्यक्ष भी बने पर पूर्व में घटित घटनाओं ने आपको अंदर तक व्यथित कर रखा था जिससे उबर पाना मुश्किल था। उत्तरोत्तर खुशियों पर पूर्व का ग़म हावी रहा जो कभी-कभी कृतियों में नज़र भी आ जाता था।

'स्टडी ऑफ ट्री ट्रंक्स' कैनवास पर तैल, कृति में घासें जीवंत हो उठी हैं, तने पर का छिलका-छिलका बोलने को आतुर हो जैसे। तने जो कट कर भूमि पर पड़े हैं अपनी वेदना भी व्यक्त करते हुए से हैं जो कहीं न कहीं रूसो के ग़म को भी दर्शाते हैं। पीछे पड़ा तना दर्द से कराहता हुआ प्रतीत हो रहा है?। बारीक से बारीक रेशे भी स्पष्ट नजर आ रहे हैं रंग एकदम से नैसर्गिक जान पड़े हैं, कल्पना का रंचमात्र भी प्रयोग नहीं है। कृति कलाकार के संवेदनशीलता को बखूबी बयां कर रही है। वहीं दूसरी कृति जहां आंधी-तूफान का अंकन है, भी जीवंत बन पड़ी है पर इस कृति में कृत्रिमता नहीं है ऐसा स्पष्ट नहीं कहा जा सकता।

जीवन के अंतिम समय में जबकि रूसो के कृतियों को लगातार महत्त्व मिलने लगा था, भावुक हृदयी रूसो पूर्व घटित घटनाओं में डूबे रहे फलतः शरीर पर प्रतिकूल असर हुआ और 22 दिसंबर 1867 को उनकी मृत्यु हो गई।

लघुकथा- जीवन के विस्तार की अभिव्यक्त

टिप्पणी

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

एक लेखक सबसे पहले अपने स्वरूप के साथ ही रचनात्मक तंत्र को ग्रहण करता है। रचना का तंत्र रचनात्मक शक्ति को प्रकट करने के लिए काफी होता है। रचना अपने आकार प्रकार से बड़ी नहीं होती बल्कि जो कहा गया है वह क्या और कैसे कहा गया तथा कितना महत्वपूर्ण तथ्य है यह रचना को आगे ले जाने के लिए काफी होता है। जहां तक लघुकथा पर बात करने चलते हैं तो एक बात साफ तौर पर सामने आती है कि लघुकथा एक क्षण को लेकर केवल प्रस्तुत भर नहीं होती है न ही लघुकथा से किसी एक घटना को प्रकाश में लाना भर ही उद्देश्य है, न ही लघुकथा किसी विस्तार का छोटा रूप है।

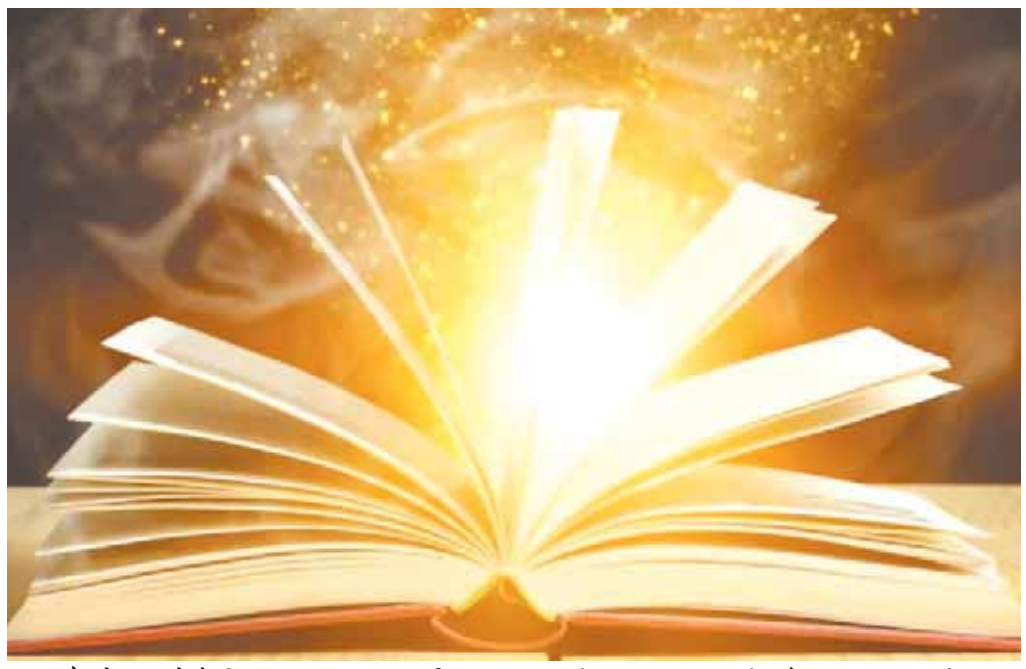

कोई भी विधा क्यों न हो, वह जीवन के विराट संदेश को लेकर चलती है। विधागत रूप के साथ ही रचना का अपना एक अलग ही स्वरूप होता है। हर रचना अपने अर्थ की दिसी से अपना आकार ग्रहण करती है और अपने महत्व को भी दर्शाती हैं। कोई विधा किसी एक रचना से प्रभावित होकर जन्म नहीं लेती बल्कि उसके जन्म के पीछे मूल रूप से रचना का अपना ही तर्क होता है। एक लेखक क्या लिख रहा है और क्यों लिख रहा है यह जानना ज्यादा महत्वपूर्ण है न कि लेखक की विधा से हम उसे परिभाषित करने चलें। एक लेखक सबसे पहले अपने स्वरूप के साथ ही रचनात्मक तंत्र को ग्रहण करता है। रचना का तंत्र रचनात्मक शक्ति को प्रकट करने के लिए काफी होता है। रचना अपने आकार प्रकार से बड़ी नहीं होती बल्कि जो कहा गया है वह क्या और कैसे कहा गया तथा कितना महत्वपूर्ण तथ्य है यह रचना को आगे ले जाने के लिए काफी होता है। जहां तक लघुकथा पर बात करने चलते हैं तो एक बात साफ तौर पर सामने आती है कि लघुकथा एक क्षण को लेकर केवल प्रस्तुत भर नहीं होती है न ही लघुकथा से किसी एक घटना को प्रकाश में लाना भर ही उद्देश्य है, न ही लघुकथा किसी विस्तार का छोटा रूप है। लघुकथा जीवन के किसी एक प्रसंग को लेकर उसके भीतर से उत्पन्न क्षण को अभिव्यक्त करती है कि वहीं एक क्षण में शाश्वत जीवन सत्य का संदेश लेकर इस तरह से चलती है कि लघुकथा आपके सामने जीवन के एक हिस्से को उसकी पूरी समग्रता में प्रस्तुत कर देती है। यहां यह कहा जाना ठीक होगा कि लघुकथा जीवन का मूल्य संसार एक संदेश के साथ रचती है। लघुकथा में कथानक, कथन और संप्रेषण की जितनी क्षिप्रता होती है उतनी ही ज्यादा अपने अर्थपूर्ण संसार को लेकर विराट हो जाने की सघन चिंता भी होती है। जीवन की विराट यात्रा में एक क्षण कैसे महत्व रखता है और वह कौन सी बात है जिसके कारण हमारे पूरे जीवन को प्रकाश में लाने की जो शक्ति है वह क्षण की विराटता में ही दिखाई देती है।

लघुकथा को साधने के लिए जिन बातों पर गौर करने की जरूरत है वह इस प्रकार है -

1. लघुकथा हमारे जीवन संदर्भ से किसी एक केंद्रीय बात को लेकर सांसारिक सत्य और जीवन के मूल धर्म को एक साथ अभिव्यक्त करती है ?।

2 . लघुकथा एक मार्मिक क्षण को लेकर जीवन सत्य का बखान करती है।

3. लघुकथा में कथा तत्व किसी एक बात के साथ शुरू होकर एक ही केंद्र बिंदु से जीवन की कहानी को कहे जाने की शक्ति रखती है।

4. लघुकथा में हर बात , बहुत बड़ी बात की उपलब्धि होती है। एक ही बिंदु से कैसे जीवन प्रसंग को समझा जा सकता है इसे समझाने के लिए लघुकथा एक टूल की तरह प्रयोग की जाती है।

5. लघुकथा लेखक की ताकत को प्रकट करती है, कम से कम शब्द में बड़ी से बड़ी बात को कहने की इससे सुंदर कोई और विधा है ही नहीं।

6. लघुकथा प्रयोग है कि कैसे शब्द और संकेत व कामा से कोई जीवन की कथा कह सकता है।

7. लघुकथा के सहारे छोटे छोटे प्रसंग से न केवल कथा कही जाती है बल्कि जीवन सत्य को प्रकट करने का काम करती है।

8. लघुकथा एक चमक व कौंध है जहां से कोई प्रसंग प्रकाशित होता है। जीवन का कोई भी प्रसंग क्यों न हो वहां लघुकथा के लिए एक अवकाश रचता है।

9. लघुकथा में हर छोटी-बड़ी बात जीवन का एक साक्ष्य बनकर सामने आती है। आप चाहे न चाहे जीवन आप से आप लघुकथा में दौड़ने लगता है।

लघु कथा मानव मन की एक कौंध व एक चमक होती है । यहां पर कला का जो क्षण है वह मूलतः विराट सत्ता की अभिव्यक्ति है। यहां जीवन का एक क्षण ही विराट को साधने के लिए पर्याप्त होती है। एक प्रकार से रचना का रूप तंत्र तय नहीं होता बल्कि रचना क्या कहना चाहती है और क्यों कहना चाहती है यह प्रश्न रचनाकार के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। रचनाकार केवल एक समय में नहीं होता न ही उसके सोचने का तरीका एक होता है। वह तो एक ही समय में कई सारे समयों में आवाजाही करता है। यह जो रचनात्मक समय होता है एक साथ समय के अन्य रूपों का अध्धयन करता है। जहां तक लघुकथा का सवाल है तो लघुकथा का रूप तंत्र चाहे जितना संक्षिप्त हो पर रचनात्मक संसार का विस्तार बहुत बड़ा होता है। किसी भी रचनात्मक विधा को जब हम प्रयोग में लेते हैं तो वह अपनी बात को कहने का कोई आसान तरीका नहीं होता बल्कि वह हमारे स्वभाव को अभिव्यक्त करता है। जो लोग स्वाभाविक रूप से विवरण में रूचि लेते हैं उनके लिए लघुकथा नहीं है उन्हें लम्बी कहानी और उपन्यास को साधना चाहिए पर जो संक्षिप्त प्रयोग के अभिलाषी हैं उनके लिए लघुकथा एक मुफीद विधा है। एक घटना, एक प्रसंग को लेकर एक नई चमक के साथ आना लघुकथा को साधने के लिए जरूरी हो जाता है। क्षण विशेष को रचनात्मक रूपाकार में ढ़ालना लघुकथा कार के सामने सबसे बड़ी चुनौती होती है। रचनाकार की आंखों में पूरा समय आकर चमक उठता है। आज का समय बहुत तेजी से नये रूप रंग में आकार लेते हुए सामने आ रहा है। यह जो गति है वहीं दुनिया के बदलाव का दुनिया की नई से नई तकनीक का सबसे बड़ा कारण बन जाती है। यह जो कुछ है वह अगले ही क्षण बदलने वाला है, बहुत कुछ बदलने के बाद भी नहीं बदल पाता इसमें जो कुछ स्थिर है वह अपनी गति के बाद भी संसार की सत्ता को प्रकट कर देती है। लघुकथा जीवन का एक प्रसंग है और एक अभिव्यक्ति भी है साथ ही वह सत्य है जिससे बड़ी बात अभिव्यक्त होती है।

सियासी हालात को कोई किस हद तक प्रेडिक्ट कर सकता है?

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

कोई एक वेब सीरीज जो कुछ घटने वाला है उसको किस हद तक प्रेडिक्ट कर सकती है यह एक लम्बी बहस का विषय है मगर - ' महारानी सीजन फोर ' तो लगता है कि हालिया सम्पन्न बिहार चुनाव में एक गठबंधन विशेष को फायदा पहुँचाने के हिसाब से बनाई गई लगती है ।यह वेब सीरीज बिहार चुनाव के बीच आई एक ऐसी कहानी थी जो वंशवाद को महिमामण्डित करती है, केंद्र को ईडी-सीबीआई का दुरुपयोग करने वाला साबित करती है और बिहार की समस्याओं के पीछे केंद्र को जिम्मेदार ठहराती है ।बिहार विधान सभा चुनाव के पहले चरण के वोटिंग के ठीक पहले यह सिरीज रिलीज़ होती है जिसमें प्रधानमंत्री को ईडी-सीबीआई का खुलकर दुरुपयोग करने वाला दिखाया जाता है, विपक्ष दलों को किसी भी कीमत पर बर्बाद किया जाता है, वंशवाद का महिमामण्डन किया जाता है, और बिहार को स्पेशल स्टेटस न देने और केंद्र की तानाशाही के चलते बिहार की सरकार को एक-एक रूपये के लिए मोहताज होते दिखाया जाता है । एक सामान्य आदमी इस सिरीज़ को देखकर बिहार की सारी समस्याओं के लिए केंद्र को आसानी से जिम्मेदार ठहरा सकता है। इतना ही नहीं इस सिरीज में कई ऐसे घटनाक्रम को वर्तमान प्रधानमंत्री से जुड़ी घटनाओं से जोड़ने की कोशिश की गई है। सिरीज को देखते हुए बार-बार यह महसूस होता है कि इसमें जानबूझकर वर्तमान प्रधानमंत्री को निशाना बनाया जा रहा है।

मीडिया के एक तबके ने कहा इस सिरीज़ का कोई असर नहीं होगा (और वैसा ही हुआ भी)क्योंकि बिहार के गांवों में कौन सिरीज देखता है? पर बात इतनी आसान नहीं होती है.ऐसी कहानियों के रिलीज होने पर समीक्षाएं लिखीं जाती हैं, सोशल मीडिया पर चर्चा होती है, युवा वर्ग गाँव-गाँव में मोबाइल पर सिरीज देखने लगा है । यू ट्यूब पर समीक्षाएं देखी जाती हैं।एक आदमी सिरीज देखता है तो कम से कम दस लोगों तक अपनी बात को फैलाता है. इस तरह कहानी के जरिए आज का एजेंडा सेट किया जाता है । मगर बिहार के चुनाव परिणाम ने इसे गलत साबित किया और यह भी कि कोई फिल्म या वेब सीरीज आज का एजेंडा चाहकर भी प्रेडिक्ट नहीं कर सकती है ।

मुम्बईया फिल्ममेकर्स के लिए महिला मुख्यमंत्री इन सीजन का फेवरिट सब्जेक्ट है। 'क्वीन' को दुनिया देख चुकी है। 'मैडम चीफ मिनिस्टर' रिलीज हो चुकी है। 'थलाइवी' रिलीज होने वाली है। और इन्हीं कहानियों के बीच 'महारानी' ने दस्तक दी है । महारानी के इसके पहले के तीन संस्करण भी बिहार की राजनीतिक कहानियों से प्रेरित रहे हैं. अभी पिछले सीजन तक नवीन कुमार नाम से नेगेटिव किरदार को नीतीश कुमार की तरह पेश किया गया था. इस सीजन में यह नवीन कुमार जेल में सजा काट रहा है. और पीएम जोशी बिहार की राजनीति में जीत के लिए उसका इस्तेमाल कर रहे हैं । इस बार कहानी बिहार से निकलकर केंद्र में पहुँच गई है. पर कहानी के सेंटर में बिहार ही है। सिरीज का थीम मूल रूप से 1990 के लालू-राबड़ी युग से इंस्पायर्ड है ।सीजन 4 में टाइम 2000 से 2024 तक का दिख रहा है.। रानी भारती (हुमा कुरैशी) बिहार की दूसरी बार सीएम बनी हुई हैं. मुख्य कंफ्लिक्ट दिल्ली शिफ्ट हो जाता है. पीएम सुधाकर श्रीनिवास जोशी (विपिन शर्मा) रानी से गठबंधन मांगते हैं, क्योंकि पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने समर्थन वापस ले लिया है ।

तकनीकी रूप से वेब सीरीज काफी कमजोर है। कलर पैलेट का सेलेक्शन सिरीज की सबसे बड़ी गलती है। कहानी यहीं से नकली लगनी शुरू हो जाती है। जैसे सिरीज की कहानी में रोमांच लाने के लिए जबर्दस्ती घोटाला घोला गया है वैसे ही सिरीज की बहुत ही कमजोर कहानी में ये मिट्टी का रंग घोला गया है। लेकिन, जहाँ लिखावट में ही जान न हो तो भला सिर्फ सजाने से तो कहानी में दम आने से रहा। सिरीज की एक और बड़ी कमजोरी इसकी कास्टिंग भी है। फिल्म का कैमरा, बैकग्राउंड म्यूजिक, एडीटिंग सब एक पहले से तय पैटर्न पर है। पूरी सिरीज यूँ लगता है कि किसी फिल्ममेकर ने नहीं बनाई बल्कि किसी फैक्ट्री से बनकर निकली है ये सिरीज।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है ,हुमा कुरैशी ने अपने अभिनय में पूरी जान लगा दी है रानी से महारानी बनने में। लेकिन, उनका चरित्र करीने से लिखा नहीं गया है। इस चरित्र में थोड़ा और माँ का आँचल, थोड़ा और पत्नी का कलेजा मिलना रह गया है। सोहम शाह का अभिनय देखकर लगता नहीं कि उन्होंने सिनेमा में लम्बी पारी खेलने के लिए कोई लम्बी प्लानिंग कर रखी है। वह बस जो भी किरदार मिल रहा है किये जा रहे हैं। अतुल तिवारी फिर भी राज्यपाल वाली गरिमा के अनुरूप अभिनय का पूरा प्रयास करते हैं। लेकिन, इस चरित्र की अपनी सीमाएं हैं। सिरीज में हुमा कुरैशी के बाद अगर किसी का अभिनय प्रशंसनीय है तो वह हैं कनी का।इस कलाकार में भविष्य की काफी समृभावनाएं दिखती हैं। उनके चेहरे का ओज बताता है कि उनके भीतर कितनी ऊर्जा भरी है।

जनजातीय समाज का इतिहास गौरवशाली और समृद्धः नरेन्द्र शिवाजी पटेल

305 करोड़ से अधिक के विभिन्न विकास कार्यों का हुआ लोकार्पण और भूमिपूजन

बैतूल। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 15 नवंबर को पुलिस ग्राउंड में जनजातीय गौरव दिवस का मुख्य जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने शिरकत की, वहीं विशेष अतिथि के रूप में खरगोन सांसद श्री गजेंद्र सिंह पटेल, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, भैंसदेही विधायक श्री महेंद्र सिंह चौहान, मुलताई विधायक श्री चंद्रशेखर देशमुख, घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगाबाई उईके, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री राजा पवार, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री हंसराज धुर्वे, जिला पंचायत सदस्य श्री मंगल सिंह धुर्वे, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, पूर्व सांसद श्रीमती ज्योति धुर्वे, जनपद अध्यक्ष आठनेर श्रीमती रोशनी इवने, पूर्व विधायक गीता धुर्वे, रामजीलाल उईके, श्री सुधाकर पवार उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रभारी कलेक्टर श्री अक्षत जैन, अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट, एसडीएम श्री अभिजीत सिंह, सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य सहित अन्य विभागीय अधिकारी तथा बड़ी संख्या में जनजातीय समाज उपस्थित रहा। कार्यक्रम के दौरान जनजातीय गीतों पर मुख्य अतिथियों ने नृत्य भी किया।

सर्वप्रथम मुख्य अतिथियों ने जनजातीय महापुरुषों के छायाचित्र समक्ष दीप प्रज्वलित और माल्यार्पण कर जिला स्तरीय कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके पूर्व जनजातीय गौरव दिवस पर महानायकों पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन कर मुख्य अतिथियों ने जिले में 80 करोड़ से अधिक की राशि से विकास कार्यों का भूमिपूजन तथा 225 करोड़ से अधिक की लागत के कार्यों का लोकार्पण किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम स्थल पर राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' का सामूहिक गायन किया गया। इस दौरान जनजातीय महानायकों के संघर्ष और जनजातीय लोगों के उत्थान पर आधारित लघु फिल्म का अवलोकन भी किया गया। इस अवसर पर जनजातीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों के तहत कन्या क्रीड़ा परिसर सहित अन्य स्कूली विद्यार्थियों और जनजातीय कलाकारों ने नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी। तत्पश्चात राज्य स्तरीय कार्यक्रम का लाइव प्रसारण भी कार्यक्रम स्थल पर किया गया। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथियों ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, जनजातीय कलाकारों, मेधावी विद्यार्थियों, विभिन्न क्षेत्र में हितलाभ वितरण कर सम्मानित किया।

जनजातीय गौरव दिवस के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रभारी मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने कहा कि जनजातीय समाज की नृत्य संस्कृति अद्भुत हैं। भगवान बिरसा मुंडा ने जल, जंगल, जमीन की रक्षा के चलाए गए महाअभियान का गुणगान राष्ट्रगीत वंदे मातरम में सुजलाम, सुफलाम और मलयज शीतलाम के गायन में याद करते हैं। जनजातीय समाज के नागरिक हर क्षेत्र में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे और देश के विकास में अपना योगदान दे रहे है। आज भारत की सर्वोच्च पद पर आसीन तीनों सेनाओं के प्रमुख महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जनजातीय समाज से हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनजातीय नायकों और समाज का गौरव बढ़ाने का काम किया है। वीर जनजातीय नायकों के इतिहास को संजोने और उनके प्रेरक कार्यों को जनता के सामने लाने का काम भारत सरकार कर रही हैं। भारिया, सहारिया, बैगा जैसी पिछड़ी जनजातीय को भी प्रधानमंत्री जन मन योजना के माध्यम से लाभान्वित किया जा रहा हैं। धरती आबा जनजातीय उत्कर्ष अभियान के माध्यम से जनजातीय क्षेत्रों में सड़क, बिजली, स्वास्थ्य की अधोसंरचना निर्माण के लिए 80 हजार करोड़ की स्वीकृति की गई। उन्होंने बताया कि बैतूल जिले में सरदार गंजन सिंह कोरकू के नाम पर भैंसदेही और सरदार विष्णु सिंह गोंड ने नाम पर सारणी महाविद्यालय का नामकरण किया गया है। इसी प्रकार सरदार राम जी कोरकू के नाम मेंढा जलाशय का नाम किया गया है।

554 जनजातीय बाहुल्य ग्रामों में ग्रामीणों को किया जा रहा लाभान्वित

प्रभारी कलेक्टर श्री अक्षत जैन ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयंती के अवसर पर प्रतिवर्ष 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस मनाया जाता है। केंद्र और राज्य सरकार द्वारा जनजातीय समाज के उत्थान के लिए अनेकों योजनाएं शुरू की गई है। बैतूल जिले के 554 जनजातीय बाहुल्य ग्रामों में धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान और आदि कर्मयोगी अभियान का क्रियान्वयन किया जा रहा है। उन्होंने कहां की धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत 554 जनजाति बाहुल्य ग्रामों में 17 विभागों की 25 हितग्राही मूलक योजनाओ में शत प्रतिशत हितग्राहियों को लाभान्वित किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। इन सभी ग्रामों में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण में अब तक प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना में 12 हजार से अधिक आवास स्वीकृत किए गए हैं। 3 लाख 90 हजार से अधिक आयुष्मान कार्ड बनाए गए हैं। लगभग 400 लाख के 670 से भी अधिक विद्युतीकरण संबंधित कार्य स्वीकृत किए गए हैं। जिसमें 158 पूर्ण हो चुके हैं। 10 सांदीपनि विद्यालयों में बालक, बालिका छात्रावास निर्माण के लिए 40 करोड़, लगभग 40 छात्रावास आश्रम के लिए 8.30 करोड़, 13 संस्थानों में 30 अतिरिक्त कक्ष निर्माण के लिए 5 करोड़, एक छात्रावास एवं दो आश्रम नवीन भवन निर्माण के लिए 9.30 करोड़ स्वीकृत किए गए हैं। इसी प्रकार आदि कर्मयोगी अभियान के उत्कृष्ट क्रियान्वयन से राष्ट्रपति सम्मान भी प्राप्त हुआ, वहीं सिकलसेल एनीमिया के उत्कृष्ट क्रियान्वयन पर मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रम में जिले को सम्मानित किया गया। इस दौरान उन्होंने आदि कर्मी योगी अभियान की संपूर्ण जानकारी दी।

जनजातीय वीरों और उनके गौरवशाली इतिहास और संस्कृति को किया याद

विधायक महेंद्र सिंह चौहान ने कहा कि जनजातीय वीरों और उनके गौरवशाली इतिहास और संस्कृति को याद कर गौरवान्वित हो रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनजातीय गौरव दिवस मनाकर वीर सपूतों को सम्मान दिलाया हैं। उन्होंने प्रत्येक जनजातीय नायकों की जन्म जयंती के अवसरों पर स्कूलों में प्रभात फेरियों के आयोजन का सुझाव दिया। विधायक श्री चंद्रशेखर देशमुख ने कहा कि जनजातीय कल्याण के उद्देश्य से अनेक योजनाएं संचालित की जा रही है। जिससे पूरे देश के जनजातीय वर्ग के साथ बैतूल जिले का जनजातीय समाज भी लाभान्वित हो रहा हैं। विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे ने कहा कि हर्ष और गौरव की बात है कि आज हम भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जन्म जयंती मना रहे है। जिन्होंने अंग्रजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में संघर्ष कर अपने प्राणों की आहुति दी। उनकी वीर गाथा से आने वाली पीढ़ी भी प्रेरित हो रही है। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज को सकारात्मक दिशा दिखाने का काम जनजातीय महापुरुषों ने किया है। हमें जनजातीय नायकों से प्रेरित होने की आवश्यकता है। उन्होंने भावी पीढ़ी से आग्रह किया कि हमारे वीर जनजातीय सपूतों से प्रेरित होकर हमारी संस्कृति की रक्षा और उत्थान के लिए तत्पर रहे। विधायक श्रीमती गंगाबाई उईके ने गोंडी भाषा में सभी को जनजातीय गौरव दिवस की शुभकामनाएं दी और अतिथियों का स्वागत किया।

बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती समापन एवं जनजातीय गौरव दिवस पर जिला स्तरीय समारोह हुआ

धार। बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के समापन एवं जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर जिला स्तरीय कार्यक्रम लालबाग परिसर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिले के प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय रहे। महंत निलेश भारती, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, एसपी मयंक अवस्थी सहित जनप्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में समारोह का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वालों को सम्मानित किया गया।

प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि जनजाति समाज ने भारत के इतिहास में जो योगदान दिया है, उसे लंबे समय तक उचित स्थान नहीं मिला। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों के दमन के दौर में जनजाति वीरों ने निर्भीक होकर संघर्ष किया और बिरसा मुंडा के नेतृत्व में ऐतिहासिक विद्रोह को जन्म दिया।

मंत्री ने कहा कि जनजाति समाज सदैव वीरता, साहस और राष्ट्रधर्म का प्रतीक रहा है। मुगलों से लेकर अंग्रेजों तक के संघर्षों में जनजाति योद्धाओं ने तीर-कमान और गोफन के बल पर दुश्मनों को पीछे हटाया। महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी की सेनाओं में भी जनजाति योद्धाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही, किंतु इतिहासकारों ने इन योगदानों को उपेक्षित किया।

उन्होंने झारखंड के विद्रोह के नेता बुधु भगत को श्रद्धांजलि दी और कहा कि उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के अत्याचारों के विरुद्ध जनजाति समुदाय को संगठित किया। सिद्धू-कानू के विद्रोह का उल्लेख करते हुए कहा कि दोनों भाइयों ने अंग्रेजों को कई बार चुनौती दी और अंततः प्राणों का बलिदान देकर इतिहास रच दिया। उन्होंने कहा कि आज देश की सर्वोच्च संवैधानिक पद पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का होना जनजाति समाज के सम्मान का प्रतीक है। 1857 की क्रांति में भीमा नायक, शंकर शाह और रघुनाथ शाह जैसे जनजाति वीरों के योगदान को याद करते हुए मंत्री ने बताया कि शंकर शाह और रघुनाथ शाह ने सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर कर दिए। पचमढ़ी के राजा भगवत सिंह के साहस को भी उन्होंने याद किया, जिन्होंने केवल ढाई-तीन सौ सैनिकों के साथ पांच हजार अंग्रेजी सिपाहियों को मधुमक्खियों के छत्ते का प्रयोग कर पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐसे क्रांतिकारियों को उचित स्थान और सम्मान दिलाने का काम किया है। उन्होंने टंट्या मामा के संघर्ष का उल्लेख करते हुए बताया कि अंग्रेज उनके नाम से भयभीत रहते थे और ट्रेनें भी उन्हें सलामी देने के लिए रुकती थीं।

मंत्री ने कहा कि सरकार ने जनजाति समाज के उत्थान और सम्मान के लिए कई ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं। हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर रानी कमलापति के नाम पर करना, छिंदवाड़ा में शंकर शाह विश्वविद्यालय की स्थापना और शिक्षा व रोजगार के क्षेत्र में बड़े स्तर पर योजनाओं का क्रियान्वयन इसी दिशा में किए गए महत्वपूर्ण कदम हैं। उन्होंने बताया कि आज बड़ी संख्या में जनजाति युवा डॉक्टर, इंजीनियर, इंस्पेक्टर, कलेक्टर और उच्च पदों पर चयनित हो रहे हैं।

प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वाले प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कृष्णपालसिंह पिता प्रतापसिंह बघेल, ग्राम अगावा डही (धार) को MP PSC 2025 में डिप्टी कलेक्टर चयनित होने पर सम्मानित किया गया।

कु. रागीश्री, ग्राम नालछा (धार) को हॉकी नेशनल, कु. गोलू पिता धर्मेन्द्र, ग्राम मरकेड़ा कुक्षी को नेशनल हैंडबॉल, कु. दिव्यांशी पिता सतीश, सरदारपुर को दो बार फुटबॉल नेशनल, तथा कु. अर्चीता पिता कमल निनामा, सरदारपुर को फुटबॉल नेशनल में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सम्मानित किया गया। धनंजय सोलंकी को तीरंदाजी में विद्यालयीन राज्य स्तरीय स्वर्ण पदक अर्जित करने पर सम्मान मिला।

पर्यावरण संरक्षण क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य के लिए सुनिल भाई ठाकुर, ग्राम ढेडगाँव मनावर को सम्मानित किया गया। उन्होंने 51 गाँवों में त्रिवेणी पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण तथा समाज में धार्मिक कार्यों के माध्यम से उल्लेखनीय योगदान दिया।

उप मुख्यमंत्री ने सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का किया निरीक्षण

प्रशिक्षण प्राप्त कर रही बालिकाओं से किया संवाद

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कन्या महाविद्यालय रीवा परिसर में गोकुलदास एक्सपोर्ट द्वारा दिए जा रहे सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का निरीक्षण किया। उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर रही बालिकाओं से संवाद करते हुए कहा कि आप सब प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। लड़कियाँ किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। जरूरत इस बात की है कि उन्हें अवसर उपलब्ध कराया जाए।

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में निर्धन वर्ग की लड़कियों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के उद्देश्य से प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है ताकि प्रशिक्षण प्राप्त कर लड़कियाँ अन्तर्राष्ट्रीय कंपनी में रोजगार पा सकें। श्री शुक्ल को बताया गया कि अभी तक केन्द्र से 30 प्रशिक्षण प्राप्त कर बालिकाओं को बैंगलोर में रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि अब रीवा से बैंगलोर जाना आसान हो जाएगा। आगामी 22 दिसम्बर से रीवा से इंदौर के लिए वायु सेवा प्रारंभ हो जाएगी और इंदौर से लोगों को सीधे बैंगलोर की कनेक्टिंग फ्लाइट मिल सकेगी। श्री शुक्ल ने कहा कि इस केन्द्र के माध्यम से अधिक से अधिक लड़कियाँ प्रशिक्षण प्राप्त कर लेंगी तो गोकुलदास कंपनी की इकाई रीवा में स्थापित करने के प्रयास होंगे। प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षणार्थियों को आवास व्यवस्था सहित अन्य व्यवस्थाओं के संबंध में उप मुख्यमंत्री ने जानकारी प्राप्त की।

इस अवसर पर कार्यकारी संचालक एमपीआईडीसी यूके तिवारी ने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय कंपनी के कपड़े पूरे विश्व में निर्यात किए जाते हैं, जहाँ रीवा से प्रशिक्षण प्राप्त कर 30 लड़कियों को रोजगार के अवसर मिले हैं। निरीक्षण के समय जनभागीदारी समिति के विधायक प्रतिनिधि विवेक दुबे, गौसंवर्धन बोर्ड के पूर्व उपाध्यक्ष राजेश पाण्डेय, केके गर्ग सहित प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थी बालिकाएं उपस्थित रहीं।

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने सीएमएचओ डॉ मनोज हुरमाड़े और डॉ.अंकिता सिते को किया सम्मानित

125 दिवसीय सिकल सेल एनीमिया अभियान का उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिए मिला प्रशस्ति पत्र

बैतूल। जिले में 125 दिवसीय सिकल सेल एनीमिया स्क्रीनिंग और जागरूकता अभियान में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर जबलपुर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में राज्यपाल मंगूभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज हुरमाड़े और नोडल अधिकारी डॉ. अंकिता सीते को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। इस दौरान के केंद्रीय राज्यमंत्री जनजातीय मामले श्री दुर्गादास उईके, प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री हेमन्त खंडेलवाल सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी उपस्थित रहें। राज्य स्तरीय कार्यक्रम में सिकल सेल एनीमिया अभियान पर केन्द्रित लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया।

सीएमएचओ डॉ. मनोज हुरमाडे ने बताया की जनजातीय बहुल बैतूल जिले में सिकल सेल नियंत्रण के लिए कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी और जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अक्षत के मार्गदर्शन में ÷सिकल मित्र÷ नामक नवाचार शुरू किया गया। इस पहल के तहत युवाओं, शिक्षकों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और विद्यार्थियों को विशेष प्रशिक्षण देकर सिकल सेल रोग की पहचान, स्क्रीनिंग प्रक्रिया, जेनेटिक काउंसलिंग और प्रारंभिक परामर्श की जानकारी दी गई।

भियान के दौरान स्कूलों और महाविद्यालयों में जागरूकता कार्यक्रम, पोस्टर प्रतियोगिता, रैलियां और शिविर आयोजित किए गए, जबकि डिजिटल माध्यमों – सोशल मीडिया, व्हॉट्सऐप और रेडियो के जरिए समुदाय तक महत्वपूर्ण जानकारी लगातार पहुंचाई गई।

नोडल सिकल सेल डॉ अंकिता सिते ने बताया कि सिकल मित्रों ने स्वास्थ्य विभाग के शिविरों में सक्रिय भूमिका निभाते हुए ग्रामीणों को परीक्षण केंद्रों से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन प्रयासों का परिणाम यह रहा कि केवल 125 दिनों में 1,47,849 लोगों की सिकल सेल स्क्रीनिंग की गई, जिसमें 248 सिकल सेल रोगी और 1,258 सिकल सेल वाहक चिन्हित हुए। इस असाधारण प्रयास ने बेतूल को पूरे प्रदेश में दूसरा स्थान दिलाया है।

बैतूल में बनी सिकलसेल एनीमिया पर शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री का किया प्रसारण- बेतूल में बनाई गई सिकल सेल एनीमिया पर शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री को जबलपुर में आयोजित 150वीं बिरसा मुंडा जयंती पर आयोजित जनजातीय गौरव दिवस पर प्रसारण किया गया। डॉ अंकिता सिते ने बताया कि फ़िल्म का मुख्य संदेश ÷शादी से पहले कुंडली नहीं, पहले अपना सिकल सेल स्टेटस कार्ड बनवाएँ।÷ हैं यह डॉक्यूमेंट्री सिर्फ बीमारी नहीं बताती बल्कि जेनेटिक काउंसलिंग का महत्व, आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी और एक टेस्ट की बदलती ताकत भी दिखाती है। बैतूल से निकला यह संदेशज अब पूरे प्रदेश में जागरूकता की नई राह बना रहा है।

बीआर अंबेडकर कॉलेज में मनाई बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती

बैतूल। भीमराव रामराव अंबेडकर बीएड कालेज बैतूल में धरती आबा भगवान बिरसा मुण्डा की 150 वीं जयंती पर जनजातीय गौरव दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत जनजातीय बीएड स्कालर्स नेहा बारस्कर एवं रविता उइके द्वारा बिरसा मुंडा की फोटो पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संचालक इंजी. ध्रुव

प्रकाश अग्रवाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम में नृत्य, गीत और भाषण का आयोजन किया गया। जिसमें नेहा बारस्कर द्वारा गोंडी लोक नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी गई। प्रतिभागी सुरुचि काले द्वारा स्वरचित कविता का पाठ किया। बीएड स्कालर्स तरुणा बिहारे, वर्षा रावत, दिपांशी सोलंकी, रेशमा टिटवारे, प्रियंका बिहारे, लीना झरबडे ने बिरसा मुंडा के 150वीं जयंती पर भाषण एवं गीत प्रस्तुत किया। इन्हें मेडल एवं प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. जीडी देशमुख, वरिष्ठ प्राध्यापक सुनिल वर्मा, डॉ. सतीश गावंडे ने जनजातीय गौरव दिवस पर अपने व्याख्यान दिये जिसमें समस्त स्टाफ एवं बीएड स्कालर्स उपस्थित रहें।

जनसेवा कल्याण समिति ने मनाई भगवान बिरसा मुंडा की जयंती, प्रतिमा पर किया माल्यार्पण

शनिचरा बाजार स्थित प्रतिमा स्थल पर जुटे समिति सदस्य

आमला। जनसेवा कल्याण समिति ने शनिवार को शनिचरा बाजार स्थित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उनकी जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई। समिति के सदस्यों ने एकत्रित होकर देश की आजादी और आदिवासी समाज के अधिकारों के लिए बिरसा मुंडा के अतुलनीय योगदान को याद किया और उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर समिति के सदस्यों ने भगवान बिरसा मुंडा के जीवन मूल्यों और संघर्ष को याद करते हुए उनके आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में उपस्थित जनसेवा कल्याण समिति के उपाध्यक्ष अनिल सोनपुरे ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भगवान बिरसा मुंडा सिर्फ एक स्वतंत्रता सेनानी नहीं, बल्कि समाज सुधारक भी थे। उन्होंने कहा, भगवान बिरसा मुंडा ने बहुत कम उम्र में देश और अपने

आदिवासी समाज के लिए बड़ा संघर्ष किया। उनके जीवन से हमें त्याग, संघर्ष और समाज के लिए जीने की प्रेरणा मिलती है। समिति संकल्प लेती है कि हम उनके आदर्शों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाएंगे और उनके दिखाए मार्ग पर चलते हुए जनसेवा का कार्य जारी रखेंगे। समिति के सदस्य नितिन ठाकुर, सागर चौहान ने कहा कि देश की आजादी में भगवान बिरसा मुंडा का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा, बिरसा मुंडा ने जल, जंगल और जमीन के अधिकारों के लिए ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ उलगुलान (महान विद्रोह) छेड़ दिया था। आज हमें उनके इस अतुलनीय योगदान को याद करना चाहिए और नई पीढ़ी को उनके बलिदान से परिचित कराना चाहिए। हम सभी को उनके संघर्ष और वीरता से प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर जनसेवा कल्याण समिति उपाध्यक्ष अनिल सोनपुरे, नितिन ठाकुर, सागर चौहान, अमित यादव, शुभम एसके, यश कारले, बंटी मिश्रा सहित समिति के अन्य सदस्य और स्थानीय नागरिक मौजूद रहे। कार्यक्रम का समापन सामूहिक रूप से श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद किया गया।

भव्य गीता जयंती महोत्सव की तैयारियां शुरू

हर-हर गीता, घर-घर गीता के संकल्प के साथ कार्यकारिणी गठित

धार। आगामी 1 दिसंबर 2025 को आयोजित होने वाले गीता जयंती महोत्सव को भव्य स्वरूप प्रदान करने के लिए तैयारियां जोर-शोर से शुरू हो गई हैं। धार परशुराम कल्याण बोर्ड एवं विश्व गीता प्रतिष्ठानों के संयुक्त तत्वावधान में इस विशाल आयोजन की रूपरेखा तैयार करने हेतु आज एक महत्वपूर्ण कार्यकारिणी गठित की गई।

1100 पाठों का संकल्प और सामूहिक वाचन- महोत्सव के अंतर्गत एक प्रेरणादायक लक्ष्य निर्धारित किया गया है । जिला स्तर पर श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय के 1100 पाठ तथा तहसील एवं विकासखंड स्तर पर 500 मुखाग्र पाठ का सामूहिक आयोजन किया जाएगा।

विश्व गीता प्रतिष्ठानों की केंद्रीय कार्यकारिणी (मध्य भारत प्रांत) और परशुराम कल्याण बोर्ड के जिला प्रभारी की संयुक्त बैठक में गीता स्वाध्याय प्रमुख पंडित रमेश कोठारी ने बताया कि परशुराम कल्याण बोर्ड, मध्य प्रदेश शासन और विश्व गीता प्रतिष्ठान मिलकर पूरे प्रदेश में भगवद्गीता का सामूहिक पाठ कराएंगे, जिससे जन-जन तक गीता का दिव्य संदेश पहुंचे।

नई कार्यकारिणी का गठन और दायित्व विभाजन- त्रिमूर्ति नगर स्थित श्री सांवरिया सेठ मंदिर में आयोजित इस संयुक्त बैठक में मध्य भारत प्रांत स्वाध्याय प्रधान प्रहलाद गुप्ता केंद्रीय व्यवस्था प्रमुख उज्जैन ने संचालन किया, जबकि केंद्रीय स्वाध्याय प्रधान मालवा प्रांत संयोजक निर्भल सिंह तोमर ने स्वाध्याय मंडलों के कार्यों की समीक्षा की।

महामंत्री पंडित प्रभाषणकर शर्मा इंदौर मालवा प्रांत गीता स्वाध्याय प्रमुख एवं पंडित रमेश कोठारी ने गीता जयंती के महत्व पर प्रकाश डाला और धार जिले हेतु निम्नलिखित नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई, जिन्हें महत्वपूर्ण दायित्व सौंपे गए हैं-

संरक्षक दशरथ सिग्गा, संयोजक, संतोष बाबूलाल पांडेय ,

व्यवस्था प्रमुख अशोक मनोहर जोशी
गीता शिक्षण प्रमुख स्वयं प्रकाश सोनी
महिला प्रमुख संध्या राजपुरोहित
महिला स्वाध्याय प्रमुख साधना वर्मा
स्वाध्याय प्रमुख कपिल सोलंकी
संपर्क प्रमुख गौरव गुप्ता
प्रचार-प्रसार प्रमुख पार्षद अजीत जैन, रितेश शर्मा एवं ओमप्रकाश सोलंकी ।

मुख्यमंत्री से अनुरोध- शिक्षण संस्थानों में हो गीता वाचन

परशुराम कल्याण बोर्ड के जिला प्रभारी अशोक मनोहर जोशी ने बैठक में कहा कि यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश शासन के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है और इसका मुख्य नारा है ÷हर-हर गीता, घर-घर गीता÷

इस संबंध में मुख्यमंत्री से अनुरोध किया जाएगा कि वे 1 दिसंबर को प्रदेश के सभी शिक्षण संस्थानों में संस्कृत भाषा के शिक्षकों के माध्यम से श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय का मुखाग्र वाचन प्रत्येक कक्षा में कराए जाने संबंधी आदेश जारी करें।यह पहल गीता के प्रचार-प्रसार और गीता से जुड़ने के अर्थ को समझने में मदद करेगी। विश्व गीता प्रतिष्ठानों का उद्देश्य है कि गीता का संदेश जन-जन तक पहुंचे, जिससे नई पीढ़ी को सनातनी हिंदू धर्म से जुड़ने का सुअवसर प्राप्त हो सके। जानकारी शिवपुरी से पधारे गीता स्वाध्याय के प्रमुख पंडित रमेश कोठारी एवं परशुराम कल्याण बोर्ड जिला प्रमुख अशोक मनोहर जोशी द्वारा दी गई।

बिग बॉस-19

मृदुल को निकालने के लिए क्या साजिश रची

'बिग बॉस 19' से मृदुल तिवारी के बाहर होने पर फैंस बौखला गए हैं और दर्शकों को भी गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने इस सीजन को 'धांधली भरा' बताया है। एक पोस्ट में दावा है कि कैसे मेकर्स ने मृदुल को प्लानिंग करके निकाला। एक वीडियो भी वायरल है, जिसमें लाइव ऑडियंस का हिस्सा बनकर गए शख्स ने मेकर्स की पोल खोली है।

'बिग बॉस 19' से अभिषेक बजाज और नीलम गिरी के बाद अब मिड-वीक एविक्शन में मृदुल तिवारी को निकाल दिया गया। मृदुल को लाइव ऑडियंस वाले टास्क में सबसे कम वोट मिले थे, जिसके बाद बिग बॉस ने उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया। खुद मृदुल भी हैरान रह गए और वह फूट-फूटकर रोए। उनके एविक्शन से गौरव खन्ना समेत पूरा घर रोया। लेकिन मृदुल तिवारी के एविक्शन से यूजर्स भड़के हुए हैं और इस सीजन को धांधली वाला बता रहे हैं। उनका कहना है कि जब बिग बॉस को खुद ही सारी प्लानिंग और प्लॉटिंग करनी है और तगड़े कंटेस्टेंट्स को खुद ही निकाल देना है, तो फिर क्यों ऑडियंस की वोटिंग का दिखावा करते हैं?

मेकर्स ने मृदुल तिवारी को 'बिग बॉस 19' से निकालने की बड़ी सॉलिड तैयारी की थी और एकदम माइंड गेम खेला। इसका दावा एक वायरल पोस्ट में किया गया है। इसमें बताया गया है कि कैसे और क्यों मृदुल को कम वोट मिले और एविक्शन का जाल बिछा दिया। एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें बिग बॉस के घर में लाइव ऑडियंस का हिस्सा बनकर गए एक शख्स ने मेकर्स की पोल खोल दी है।

'ग्लैम वर्ल्ड टॉक्स' के एक्स पर वायरल एक पोस्ट के मुताबिक, बिग बॉस के घर में बाहर से 150 लाइव ऑडियंस लाई गई थीं। मेकर्स ने उन्हें 50-50 के तीन ग्रुप में बांट दिया। हर ग्रुप से कहा कि वो सिर्फ तीन कंटेस्टेंट्स के बीच करें। यानी वो 9 कंटेस्टेंट्स के बीच वोट नहीं कर सकते थे। अगर मेकर्स ने 150 लाइव ऑडियंस से सभी 9 कंटेस्टेंट्स के लिए वोट करने को कहा होता, तो मृदुल तिवारी बेघर नहीं होते।

कुनिका सदानंद की टीम में तान्या मित्तल और फरहाना भट्ट थीं। पोस्ट में दावा किया गया है कि जब वोटिंग का मौका मिला, तो लाइव ऑडियंस ने उन्हीं तीनों की टीम के बीच वोट किया। तीनों को 15 से 18 वोट मिले। अगर उन 50 लोगों से सभी 9 कंटेस्टेंट्स को वोट देने के लिए कहा जाता, तो ऐसा हो ही नहीं सकता था कि कोई मृदुल को वोट न दे। दावा है कि ऑडियंस को मजबूर किया गया कि वो कुनिका, फरहाना और तान्या में से ही किसी को चुनें। हालांकि, जब ऐसा हुआ तो बहुत सी ऑडियंस ने अभिषेक बजाज का नाम चिल्लाना शुरू कर दिया था। इशारा साफ था कि उन्हें कुनिका, फरहाना और तान्या में से कोई पसंद नहीं थी।

जब शहबाज की टीम ने परफॉर्म किया तो 50 ऑडियंस ने तीनों मेंबर्स- शहबाज, मालती और अशनूर के बीच वोट किया। इनमें से जहां शहबाज को 36 वोट मिले, वहीं मालती और अशनूर को 7-7 वोट मिले थे। यानी सबसे ज्यादा वोट शहबाज को मिले थे। पोस्ट में फिर बताया गया है कि कैसे मृदुल को कम वोट मिले। इसके मुताबिक, गौरव खन्ना की टीम में उनके अलावा प्रणित मोरे और मृदुल तिवारी थे। यहां वोटिंग सिर्फ तीनों सदस्यों के बीच हुई। दावा किया जा रहा है कि इस ग्रुप को वोट करने वाली लाइव ऑडियंस महाराष्ट्र की थीं, और इस कारण मृदुल को सबसे कम चार वोट मिले, जबकि बाकी के 46 वोट गौरव खन्ना और प्रणित मोरे के बीच बंट गए। इसमें भी सबसे ज्यादा वोट गौरव को मिले।

'वीकेंड का वार' पर दिया था हिंट

माना जा रहा है कि मेकर्स ने इस वोटिंग प्रक्रिया को कुछ इस तरह से प्लान किया था कि मृदुल तिवारी को एविक्ट कर दिया जाए। उधर, सलमान भी 'वीकेंड वार' पर कई बार मृदुल को टारगेट करते नजर आए और हिंट दिया कि देर हो चुकी है। बीते 'वीकेंड का वार' में सलमान ने मृदुल के लिए कहा था, 'अब तो हो गया। अब तो बहुत लेट हो गया है।' उधर, एक्स पर एक वीडियो भी वायरल हो रहा है, जिसमें 'बिग बॉस 19' के इस टास्क में शामिल हुए शख्स ने बताया है कि मेकर्स ने उनसे कुछ और कहा था, और दिखाया कुछ और गया। यह शख्स लाइव ऑडियंस का हिस्सा था और दावा किया कि उसे या किसी भी अन्य ऑडियंस को एविक्शन के बारे में नहीं बताया गया था।

वीडियो में वह बोला कि जो परफॉर्मेंस दिया उसके ऊपर आपको वोट देना था। और जिसको ज्यादा वोट मिलेंगे, वो कैप्टन बनेगा। ये हमको बताया गया था। एपिसोड में क्या दिखाया वो पता नहीं। हमसे यही कहा गया था कि जो जीतेगा उसे कैप्टन बनाया जाएगा। 'ऐसा कुछ भी हमको नहीं बताया गया था कि जिसे कम वोट मिलेंगे उसे एविक्ट कर दिया जाएगा। एविक्शन के बारे में हमको कुछ नहीं बोला गया था। शख्स ने बताया कि उनके ग्रुप में कई लोग थे, जो सिर्फ मृदुल के लिए आए थे, और नोएडा से थे। यानी मृदुल को धोखे से एविक्ट किया गया। काम्या पंजाबी और अवेज दरबार ने भी मृदुल तिवारी के एविक्शन पर सवाल उठाए हैं।

इस उम्र में भी सलमान की लाजवाब फिटनेस

फिल्म इंडस्ट्री में सलमान खान का जलवा ही अलग है। वे इंडस्ट्री के मोस्ट हैंडसम एक्टर्स में से एक रहे हैं और अपनी एक्टिंग से फैंस का खूब मनोरंजन किया है। अब बिग बॉस शो के 19वें सीजन के इतर वे अपने पॉपुलर टूर के लिए निकल रहे हैं। कुछ समय पहले ही इसकी अनाउंसमेंट पोस्टर के जरिए की गई थी। अब टूर से पहले सलमान खान ने एक फोटो शेयर की। इस फोटो में वे इवेंट से पहले तैयारी करते नजर आ रहे हैं।

सलमान खान को चाहने वाले दुनियाभर में हैं और एक्टर की एक झलक पाने के लिए लोग बेकरार रहते हैं। भले ही एक्टर 60 की उम्र के होने जा रहे हैं, लेकिन इस उम्र में भी उनका जलवा कायम है। 'दबंग' टूर से पहले ही एक्टर ने इसकी एक झलक दिखा दी। उन्होंने अपना पैर अपनी हाइट से भी काफी ऊपर उठाया हुआ और स्ट्रेच करते नजर आ रहे हैं। वे इस स्टिल में परफेक्ट फिटनेस गोल देते नजर आ रहे हैं और काफी रिलैक्स भी हैं।

तस्वीर में सलमान खान जीन्स और टी-शर्ट में हैं और कैजुअल लुक में कूल लग रहे। सलमान खान की फिटनेस देख फैंस हैरान रह गए हैं और उनकी फोटो पर रिएक्ट करते नजर आ रहे हैं। सलमान खान के द-बैंग टूर की बात करें तो 14 नवंबर से इस टूर की शुरुआत हो गई। इस वजह से वे बिग बॉस 19 को होस्ट करते फिलहाल नजर नहीं आएंगे और उनकी जगह रोहित शेट्टी इस शो को होस्ट करती नजर आएगी।

रियल बॉक्स

परदे पर चिर रोमांस के तीन दशक

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों में रोमांस एक स्थाई फैक्टर है। फिल्म का कथानक कुछ भी हो, जिसमें नायक-नायिका के रोमांस का प्रसंग जरूर डाला जाता है। ऐसी कई फिल्मों के नाम गिनाए जा सकते हैं, जिनमें रोमांस की कहानी ने दर्शकों का मन मोह लिया था। इन फिल्मों में प्यार को कई तरह से दर्शाया गया। लेकिन, आज भी जब किसी ऐसी फिल्म का ज़िक्र किया जाता है, जिसमें रोमांस का अंदाज अनोखा था तो बात 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' पर आकर रुक जाती है। इसलिए कि यह सिनेमा के परदे पर चिर-रोमांस का प्रतीक है। यही वजह है कि 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' (डीडीएलजे) 1995 में रिलीज होने के बाद से दर्शकों के दिलों में बसी है। फिल्म दो कलाकारों राज और सिमरन के बीच की ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री पर टिकी है, जो दर्शकों ने बेहद पसंद की। यही वजह है कि फिल्म की सफलता और तीन दशकों की लोकप्रियता के पीछे भी कई कारण हैं। इसमें शाहरुख खान और काजोल की केमिस्ट्री, आदित्य चोपड़ा का सधा हुआ निर्देशन और दर्शकों के लिए एक अनोखी और रोमांचक प्रेम कहानी है। यह पारंपरिक प्रेम कहानी से हटकर है, जहां राज सिमरन के पिता को मनाता है, ताकि वे शादी के लिए राजी हों। फिल्म 30 साल से लगातार मुंबई के एक सिनेमाघर में चल रही है, जो इसकी लोकप्रियता को प्रमाण है।

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' ने सिनेमा में प्रेम कहानियों का एक नया ट्रेंड उस समय सेट किया, जब एक्शन और अपराध कथाओं वाली फिल्में ज्यादा पसंद की जाती थीं। तीन दशक पहले यह फिल्म रोमांस की एक परिपक्व, हल्की-फुल्की और पारिवारिक कहानी के रूप में सामने आई थी। इस फिल्म के गानों ने न सिर्फ दर्शकों, बल्कि फ़िल्मी गाने पसंद करने वालों को भी बरसों तक लुभाया। संवाद भी दिल तक उतरने वाले हैं। इनमें एक संवाद 'बड़े बड़े देशों में ऐसी छोटी छोटी बातें होती रहती हैं' आज भी कई बार बातचीत में उपयोग किया जाता है। सबसे रोचक है फिल्म का क्लाइमैक्स जब सिमरन का पिता बेटी को राज के साथ जाने की इजाजत देता है और वो भागकर ट्रेन पकड़ती है। वो दृश्य आज भी दर्शकों के दिल में बसा है।

इसे हिंदी सिनेमा की सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली फिल्मों में एक माना जाता है। इस फिल्म की कहानी दो एनआरआई युवाओं राज और सिमरन पर केंद्रित है। राज एक बिगड़ा हुआ अमीर पंजाबी परिवार का बिगड़ा हुआ लड़का है। जबकि, सिमरन एक बेहद सख्त पिता की बेटी है, जो भारत में पिता के तय लड़के से ही शादी करेगी। दोनों स्विट्जरलैंड में संयोग से मिलते हैं, जहां ट्रेन यात्रा के दौरान दोनों में मोहब्बत हो जाती है। राज सिमरन को उसके घर ले जाकर ससुराल का हक साबित करता है। फिल्म में पंजाब के खेतों, स्विस पहाड़ियों और पारंपरिक भारतीय संस्कृति का शानदार मेलजोल है। संभवतः ये पहली बार था जब किसी हिंदी फिल्म में एनआरआई जीवन को इतने रोमांटिक तरीके से दिखाया गया। यह फिल्म सिर्फ दो किरदारों के बीच गुंथी हुई प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि इसमें मजबूत महिला पात्रों की भूमिका भी है जो पारंपरिक सीमाओं के बीच अपनी आजादी के पल खोजती हैं।

फिल्म में सिमरन, उसकी मां, दादी और बहन जैसे कई नारी पात्रों की मौन ताकत दिखाई दी, जो सामाजिक विरोधाभासों के बीच अपने तरीके से आजादी खोजती हैं। 30 साल पुरानी इस फिल्म की एक खासियत यह भी है कि आज भी यह मुंबई के 'मराठा मंदिर' सिनेमाघर में एक शो में चल रही है। यह फिल्म प्रेम कथा के रूप में भारतीय दर्शकों के दिलों में राज करती है। यह फिल्म रोमांस को एक सांस्कृतिक और भावनात्मक प्रतीक बनाती है। फिल्म न केवल मील का पत्थर है, बल्कि प्रेम, परिवार, सम्मान और परंपरा के बीच संतुलन की एक जीती-जागती कहानी भी है। 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' ने फिल्मों में प्रेम कहानियों का नया रूप दिया और 30 साल बाद भी इसकी ताजगी और आकर्षण जिंदा है। इस फिल्म के बनने की कहानी भी दिलचस्प है। आदित्य चोपड़ा ने इस सफल फिल्म से निर्देशन की शुरुआत की। किंतु, इससे पहले फिल्म की स्क्रिप्ट लिखने में ही तीन साल लग गए। देरी का एक कारण यह भी रहा कि

शाहरुख खान को राज के किरदार के लिए मनाने में मुश्किल हुई। क्योंकि, वे 'दर्शन' जैसी सीरियस फिल्म में बिजी थे। फिर भी यश चोपड़ा को भरोसा था कि यह फिल्म शाहरुख को सुपरस्टार बनाएगी और उनका यह भरोसा सही साबित हुआ।

फिल्म में सिमरन के रोल के लिए काजोल को चुना गया, जो 'बाजीगर' में शाहरुख़ के सामने विलेन बन चुकी थी। फिल्म का बजट उस समय के हिसाब 20 करोड़ रुपए था, जो उस समय के हिसाब से बहुत बड़ा था। फिल्म की आउटडोर शूटिंग स्विट्जरलैंड और लंदन के बाद पंजाब में हुई। 200 दिन की शूटिंग के दौरान कई दिलचस्प किस्से भी हुए। एक गाने 'गाड़ी चलाओ बाबू' के लिए ट्रेन को रोका गया था। फिल्म की कहानी, निर्देशन और अभिनय के साथ ही इसके संगीत ने भी फिल्म को अमर बनाया। कुमार शानू, लता मंगेशकर, उदित नारायण, आशा भोसले और अलका याग्निक की आवाजों ने भी फिल्म में जादू बिखेरा था। फिल्म का टाइटल सांग 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' सबसे पसंद किया गया। 30 साल में इन गानों से एक हजार करोड़ से ज्यादा कमाई हुई। जतिन-ललित के संगीत आनंद बख्शी ने लिखे गीत 'तुझे देखा तो ये जाना सनम' और 'मेहंदी लगाके रखना' जैसे गाने भी फिल्म की तरह चिर लोकप्रिय बन गए।

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' की सफलता और फिल्म के यादगार बनने के पीछे लोकप्रिय और सांस्कृतिक प्रभाव वाले कुछ सीन का भी खास योगदान हैं। इनमें ट्रेन और स्टेशन का वो क्लाइमैक्स सीन जहां राज ट्रेन से झांकता है और सिमरन का हाथ पकड़कर उसे ट्रेन पकड़ने के लिए भागने में मदद करता है। यह सीन इतना पसंद किया गया कि भारतीय पॉप कल्चर का हिस्सा बन गया। इस सीन में परिवार और प्यार के बीच की जटिलता, भावनात्मक संबंध और आज़ादी की भावना को खूबसूरती से दर्शाया गया। अमरीश पुरी का डायलॉग 'जा सिमरन जा, जी ले अपनी जिंदगी' आज भी याद किया जाता है और यह भारतीय पिता-दृश्य में बदलाव की दास्तां कहता है। दूसरा सीन राज और सिमरन की पहली मुलाकात का है। इसमें एक भावनात्मक और रोमांटिक शुरुआत, जो कई बार फिल्मों में दोहराई गई। इस सीन में प्रेम की अनायास शुरुआत और युवाओं के उस दौर की बेफिक्री को दर्शाया गया है।

इसके अलावा पारिवारिक मूल्यों का सम्मान भी है। फिल्म में परिवार की अहमियत को दिखाते हुए, राज सिमरन के पिता का आशीर्वाद लेने की कोशिश करता है, जो भारतीय संस्कृति में सम्मान और पारंपरिकता का संदेश देता है। यह सीन यह बताता है कि प्रेम और सम्मान कैसे साथ-साथ चलते हैं और परिवार की सहमति मायने रखती है। 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' ने भारतीय और प्रवासी भारतीय समाज में परिवार, प्रेम, और सम्मान के बीच संतुलन बनाने की भी कोशिश की। यह फिल्म भारतीय युवा पीढ़ी के लिए प्रेम के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों की नई मिसाल बनी। इसने भारतीय संस्कृति को ग्लोबल स्तर पर पहचान दिलाई और भारतीय प्रवासी समुदाय के लिए गर्व का विषय बनी।

किसी ने कभी नहीं सोचा था कि राज और सिमरन का रेलवे स्टेशन वाला सीन प्यार करने वालों के साथ परंपरागत परिवारों के लिए एक मिसाल बनेगा। यहां तक कि फिल्म के गाने, डायलॉग और सरसों के खेत यादगार हिस्सा बन गए। इस फिल्म का थोड़ा सा अंश हर उस रोमांटिक फिल्म में मौजूद है, जो उसके बाद बनी। 'सिमरन' कई भारतीय लड़कियों में आज भी जिंदा है, जो अपने परिवार की मर्जी को मानती हैं, पर दिल में आजादी भी चाहती हैं। यही वजह है कि यह फिल्म आज भी दर्शकों के दिलों को छूती है। क्लाईमैक्स में जब सिमरन के पिता कहते हैं 'जा सिमरन जा, जी ले अपनी जिंदगी' तो यह सिर्फ डायलॉग नहीं रहता, बल्कि साहस और प्यार का प्रतीक बन जाता है। जो दर्शक 16 साल की उम्र में इस फिल्म से प्यार कर बैठे थे, आज वे अपने बच्चों के साथ इसे देख रहे हैं। यही 'डीडीएलजे' की खूबसूरती है। यह हर पीढ़ी को अपने भीतर झांकने पर मजबूर करती है।

जब कोई फिल्म 30 साल तक लोगों के दिलों में रहती है, तो वह सिर्फ कहानी नहीं रहती, बल्कि एक पूरी पीढ़ी की सोच और प्यार की परिभाषा बन जाती है। 'डीडीएलजे' ने शाहरुख और काजोल की जोड़ी को हिंदी सिनेमा का सबसे लोकप्रिय ऑन-स्क्रीन कपल बना दिया, इसमें कोई शक नहीं। यह फिल्म धीरे-धीरे सांस्कृतिक मील का पत्थर बन चुकी है, जिसने दर्शकों को यह विश्वास दिलाया कि सच्चा प्यार हमेशा जीतता है। जब कोई फिल्म एक घटना बन जाती है, तो वह सिर्फ कहानी नहीं रहती, भावना बन जाती है। आदित्य चोपड़ा की दूरदृष्टि फिल्म की असली ताकत थी। परिवार, परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाना और दिल की बात सुनने का साहस, ये विषय कभी पुराने नहीं होते।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अशोक जोशी

बाल दिवस विशेष

कच्ची नहीं है बच्चों पर बनी फिल्में

बच्चे समाज ही नहीं सिनेमा के भी अहम हिस्सा हैं। ऐसी शायद ही कोई फिल्म होगी जिसमें दर्शकों को बच्चों के दर्शन न होते हों। आश्चर्य की बात तो यह है कि कुछ वयस्क फिल्में जिन्हें ए प्रमाणपत्र मिला है, उसमें भी बच्चो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह बात अलग है

कि ये बाल कलाकार ही उस फिल्म को देख नहीं पाते हैं। नूतन और पद्मिनी कोल्हापुरे ऐसी नायिकाएं हैं जो अपनी फिल्में 'नगीना' और 'गहराई' उस समय नहीं देख नहीं पाए, जिस समय की वह प्रदर्शित हुई थी। पद्मिनी कोल्हापुरे के साथ तो यह हादसा दो बार हुआ था। 'इंसाफ का तराजू' के प्रदर्शन के समय भी उनकी आयु महज 16 साल ही थी। यह फिल्म भी बच्चों के लिए नहीं थी। एक जमाना था जब बच्चों के लिए अलग से फिल्में बनती और चलती थी।

देखा जाए तो फिल्में भी कई तरह की और विभिन्न शैलियों की होती है। इन्हें रोमांटिक, ट्रेजडी, कामेडी बायोपिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, पारिवारिक, सस्पेंस, थ्रिलर , क्राइम जैसी फिल्मों में वर्गीकृत किया गया है। लेकिन इस वर्गीकरण से अलहदा एक वर्ग और जिसकी फिल्में न केवल बनती रही हैं, बल्कि बॉक्स ऑफिस पर शान के साथ चलती भी रही है। बच्चों के लिए वैसे तो भारत सरकार के उपक्रम बाल चित्र समिति फिल्में बनाती और प्रदर्शित करती रही है। लेकिन, पिछले कई सालों से यह संगठन सुस्त पडा है। पंडित नेहरू द्वारा स्थापित बाल चित्र समिति आमतौर पर चेतक, जलदीप और 'बापू ने कहा था' जैसी शिक्षाप्रद फिल्में बनाती रहीं है जिनका सिनेमाघरों में प्रदर्शन भी इसी संस्थान द्वारा किया जाता रहा।

इन फिल्मों को बच्चों को दिखाने का जिम्मा भी सरकारी तरीके से होता रहा है जिसमें ब्लॉक बुकिंग कर स्कूल से बच्चों को फिल्में दिखाने ले जाया जाता था । लेकिन, फिलहाल यह क्रम थम सा गया है। 1954 में राज कपूर द्वारा निर्मित और प्रकाश अरोड़ा द्वारा निर्देशित 'बूट पॉलिश' भी सफल फिल्म थी जिसमे दो अनाथ बच्चों की कहानी कही गई थी। इस फिल्म को 1955 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म फेयर अवार्ड का पुरस्कार भी मिला था और फिल्म के दो बाल कलाकार मास्टर रतन और बेबी नाज ने भी फिल्मफेयर हासिल कर लोकप्रियता हासिल की।

1957 में प्रदर्शित फिल्म 'अब दिल्ली दूर नहीं' की कहानी अख्तर मिर्जा और साहित्यकार राजिंदर सिंह बेदी ने लिखी थी। इसका निर्देशन अमर सिंह ने किया था। इस फिल्म में 1951 का भारत दिखाया गया। एक बच्चा, जो कि उम्मीद भरी आंखों से एक नए स्वतंत्र भारत को देखता, वह कैसे पंडित जवाहर लाल नेहरू से मिलने के लिए दिल्ली पहुंच जाता है। उसके सामने क्या-क्या कठिनाइयां आती हैं, वह कैसे अपने पिता को जेल से रिहा कराता है। फिल्म की कहानी एक छोटे बच्चे के संघर्ष को दर्शाती है। इस बच्चे का किरदार फिल्म में मास्टर रोमी ने निभाया था। यह फिल्म युवा अमजद खान के कैमियों के लिए भी जानी जाती है। 1960 में सत्येन बोस निर्देशित और अशोक कुमार, सरोश ईरानी तथा हनी ईरानी अभिनीत फिल्म 'मासूम' भी बेहद सफल थी।

इसके एक साल बाद 1961 में बिमल राय द्वारा निर्मित तथा हेमेन गुप्ता द्वारा निर्देशित फिल्म 'काबुलीवाला' एक बच्ची और अफगानिस्तान से सूखे मेवे बेचने आए पठान के निश्छल प्रेम की कहानी है। इस फिल्म के गीत 'ऐ मेरे प्यारे वतन' और 'गंगा आए कहां से' आज भी लोकप्रिय है। मासूम के निर्देशक सत्येन बोस को बाल मनोविज्ञान की खासी परख थी। इसलिए जब भी कोई बाल कथा आधारित फिल्म बनती निर्माताओं को उनका नाम याद आ जाता। उन्होंने इस विषय पर 1964 में अब तक की सबसे सफल म्यूजिकल हिट फिल्म 'दोस्ती' का निर्देशन किया था। इसके साथ-साथ इसी साल उनके निर्देशन में बनी देव कुमार अभिनीत फिल्म 'मेरे लाल' भी अपने विषय और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत के कारण दर्शकों के बीच लोकप्रिय और सफल रही थी। उल्लेखनीय है कि व्यावसायिक फिल्मों के पुरोधा एस मुखर्जी ने जब बच्चों पर आधारित 'जागृति' का निर्माण किया तो उन्होंने भी निर्देशन की कमान सत्येन बोस को ही सौंपी और 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झांकी हिन्दुस्तान की' जैसे गीतों वाली यह फिल्म सुपरहिट साबित हुई थी।

सत्तर के दशक में देशभर के स्कूली बच्चों को तपन सिन्हा की 'सफेद हाथी' और श्याम बेनेगल की 'चरणदास चोर' जैसी फिल्में दिखाई जाती थीं। इसके बाद दूसरा दौर आया तो बच्चों के लिए गुलजार ने 'परिचय' और 'किताब' जैसी फिल्में बनाई। हिंदी ही नहीं मलयालम भाषा में 1984 में आई फिल्म माय डिअर कुत्तिचाथान, जिसे जीजो ने डायरेक्ट किया था। यह फिल्म भारतीय सिनेमा की पहली 3डी मूवी थी। इस तरह की फिल्मों से भारतीय सिनेमा ने अक्सर अपने छोटे दर्शकों यानी बच्चों को काफी प्रभावित और उनका मनोरंजन किया है। बदलते दौर में सिनेमा का अंदाज बदला तो बाल फिल्मों की कहानी और प्रस्तुतीकरण का अंदाज भी बदला। इसी दौर में 2003 में प्रदर्शित राकेश रोशन की फिल्म 'कोई मिल गया' में बच्चों के लिए एक नया विषय और दूसरे ग्रह से आए जादू को रोचक अंदाज में पेश किया गया था। 2007 में प्रदर्शित आमिर खान निर्देशित 'तारे जमीं पर' भारत में शिक्षा प्रणाली पर एक महत्वपूर्ण चोट देती है। इस फिल्म की कहानी हमारे देश के लाखों बच्चो की है, जो कि डिस्लेक्सिया से पीड़ित हैं और इसी कारण से वह सीखने में असक्षम हैं। ऐसे बच्चों को किस तरह से सिखाना चाहिए, यह फिल्म के जरिए बताने की कोशिश की गई. क्योंकि हर बच्चा स्पेशल होता है। इस क्रम में आमिर खान ने पिछले साल सितारे जमीं पर भी सफलता के साथ प्रदर्शित की थी।

2010 में प्रदर्शित 'उड़ान' बॉलीवुड की एपिक फिल्मों में से एक है। यह फिल्म बच्चों और माता-पिता के बीच के कम्युनिकेशन गैप को दर्शाती है। फिल्म में दिखाया गया था कि कैसे कई बार परिजन बच्चों को अनुशासन सिखाने के चक्कर में उन पर हद से ज्यादा कंट्रोल करने लगते हैं। बच्चों में अनुशासन होना चाहिए। इतना नहीं कि उनका दम घुटने लगे। यह फिल्म ऐसे ही एक पिता और उसके बच्चों की कहानी को दर्शाती है। 2011 में अमोल गुप्ते निर्देशित 'स्टेनली का डिब्बा' ऐसे बच्चे की कहानी है, जो किसी वजह से अपना टिफिन नहीं ला पाता। वहीं, हिंदी के टीचर वर्माजी (अमोल गुप्ते) भी अपना लंच बॉक्स नहीं लाते। उनकी नजर बच्चों के लंच बॉक्स पर रहती है। अमोल ने एक हमेशा भूखे रहने वाले टीचर का किरदार बखूबी निभाया था। यह एक मजेदार कॉमेडी फिल्म थी।

इसी साल प्रदर्शित 'आई एम कलाम' एक गरीब बच्चे की जिंदगी पर आधारित थी. जो टीवी पर पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को पढ़ाई पर जोर देते हुए देखता है। उसके मन में भी पढ़-लिखकर कुछ बनने का सपना जागता है। यह बच्चा हर तरह से मजदूरी कर केवल पढ़ाई करने की इच्छा रखता है। इस दौरान उसके जीवन में आने वाली कठिनाइयों को फिल्म में दिखाया गया है। सलमान खान भी बच्चों के चहेते फिल्मकार हैं। उनकी फिल्म 'बजरंगी भाईजान' भी बाल सुलभ प्रेम पर आधारित थी। आवारा कुत्ते के बाल प्रेम पर आधारित उनकी फिल्म 'चिल्लर पार्टी' भी बेहद पसंद की गई। बच्चों पर आधारित पुराने दौर की फिल्मों में ब्रह्मचारी, आखिरी खत, छोटा चेतन, राजा और रंक तथा चंदा और बिजली ने बाल सुलभ विषय को पर्दे पर सफलता के साथ पेश कर बॉक्स ऑफिस पर भी खूब पैसा बटोरा तो आज के दौर की चिल्लर पार्टी, बजरंगी भाईजान, अंजलि, द ब्लू अम्ब्रेला, मासूम, मिस्टर इंडिया, जलपरी, गट्टू, दो दूनी चार, फरारी की सवारी, दंगल, इंग्लिश विंग्लिश, इकबाल, मकड़ी, सतरंगी पैराशूट, हवा हवाई, बम बम भोले और भूतनाथ ने भी बच्चों का दिल बहलाने के साथ साथ फिल्म के निर्माताओं की झोली भरने का काम भी किया है।

अध्यक्ष महोदय !

प्रकाश पुरोहित

सुबह-सुबह तीन-चार लोगों की भीड़ आ गई ''आपको कार्यक्रम की अध्यक्षता करना है...।'' समझ नहीं पाया, यह आदेश था, फैसला था या चेतावनी, निवेदन या प्रार्थना जैसा तो कुछ । उड़ती-उड़ती खबर तो मिल रही थी कि मुझे जल्दी ही अध्यक्ष बनाने की साजिश रची जा रही है, लेकिन इतनी फुर्ती से यह काम अंजाम पा जाएगा, कल्पना नहीं थी। अच्छा-खासा वक्ता रहा हूं मैं अपने समय में। एक-दो वक्ता कम हो जाएं तो उनके भी तय समय तक बोलने की रियाज रही है मेरी। कई बार तो छा भी गया हूं, जब सिर्फ अपने हिस्से का बोला हूं, शार्ट एंड स्वीट! लोगों से यही बर्दाश्त नहीं हो रहा था कि एक बार माइक पकड़ने

के बाद आसानी से कैसे छोड़ देता हूं। मेरी इस हरकत की वजह से बाकी वक्ताओं को सुनना पड़ता कि देखो उन्हें... (यानी मुझे) कब आए, कब गए, पता ही नहीं चला। एक आप हैं कि चार बार पर्ची भेजी, 'अब बस भी करो... जान लोगे क्या?' तीन बार कुर्ते का कोना खींचा, कई बार तो फटने की भी आवाज आई और इशारे से लाइट गुल करवा दी, लेकिन बोलना जारी रहा।

जब गैंग ने मुझे अध्यक्षता वाला निमंत्रण दिया तो ऐसा लगा, जैसे अच्छे-खासे राजनीति करने वाले शख्स को राज्यपाल बना दिया गया हो या वैंकया नायडू को उपराष्ट्रपति की कुर्सी पर टांगाटोली करके बैठा दिया हो, या आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी जैसे वयोवृद्ध, वरिष्ठ और प्रधानमंत्री पद के जन्मजात उम्मीदवार को मार्गदर्शक मंडल की आलमारी में ट्रॉफी की तरह सजा दिया गया हो। कहां तो मुख्य अतिथि होने के ख्वाब देख रहा था और कहां नासपिटों ने अध्यक्ष की कुर्सी आगे कर दी। पूछ सकते हैं अध्यक्ष होना हर किसी को नसीब नहीं होता है, जैसे राज्यपाल या उपराष्ट्रपति या मार्गदर्शक मंडल सदस्य।

यह तो मैं ही समझ सकता हूं कि वक्ता होने के क्या फायदे हैं। पहली बात तो यही कि जरूरी नहीं है कि आप डेढ़ घंटे तक बोले हैं तो बाकी वक्ताओं को भी ध्यानपूर्वक सुनें। अपना भाषण देकर आप कहीं भी मटरगश्ती कर सकते हैं। अपनी नजर की पहुंच वाला सुंदर चेहरा नजर आ जाए तो नजरें साफ कर सकते हैं, तिकड़म भिड़ा सकते हैं कि कार्यक्रम के बाद हाइ-टी में, किस वाक्य से खूबसूरत बला को वश में किया जा सकता है, इसकी पूरी तैयारी कर सकते हैं। भूतपूर्व सफल-असफल प्रेम-प्रकरणों का वीडियो ऑन कर पूरे समय एकांत पलों का मजा, उस भीड़ भरे मंच पर ले सकते हैं। चूंकि हर जगह एक जैसा ही वक्तव्य देना होता है तो किसी और को सुनने की जरूरत नहीं रहती!

वक्ता से अगर अध्यक्ष बना दिए गए...तो गए काम से! अध्यक्ष को सबसे आखिर में बोलने का मौका मिलता है, उसमें भी अपनी बात कहने की गुंजाइश कम ही होती है कि 'फलाने विद्वान ने अभी कहा कि...' कहते हुए बात शुरू करना होती है। यानी दूध कोई दे, दही कोई जमाए, बिलाए कोई और, मगर मक्खन तो अध्यक्ष को ही समेटना पड़ता है। ऐसी नपुंसक-उपलब्धि से कौन खुश हो सकता है! बोलने वाले यानी वक्ता भी जब भूलने या गड़बड़ाने लगते हैं तो 'अध्यक्ष महोदय यहां बैठे हैं' कहते हुए याद करने लगते हैं कि सिरा कहां से छूटा था। और वक्ता भी बाज नहीं आते कि 'अध्यक्ष महोदय यहां बैठे हुए हैं', जबकि उस समय तक अध्यक्ष महोदय लेटे हो चुके होते हैं। इतना सुनते ही लोड के सहारे अधलेटे अध्यक्ष झटके से 'बैठे हैं' हो जाते।

सच पूछिए तो अध्यक्ष महोदय की जरूरत किसी आयोजन में इसलिए अनिवार्य हो जाती है कि दावे से कहा जा सके कि एक व्यक्ति तो ऐसा था, जिसने पूरा आयोजन पूरे ध्यान से सुना। कार्यक्रम के बाद मीडिया को दी जाने वाली जानकारी में अगर किसी बात पर संदेह होता है तो आयोजक कहता है 'पूछ लो अध्यक्ष महोदय से, उनको बैठाया ही इसलिए था कि एक-एक बात ध्यान से सुनें। वक्ता तो अपनी बारी आने के पहले तक इधर-उधर हो सकता है और अपना काम निपटा कर धीरे से मंच छोड़ बाहर आ-जा सकता है। माइक, डायस और अध्यक्ष ही ऐसे होते हैं, जो शुरू से आखिर तक जस-के-तस धरे रहते हैं।

जब 'अध्यक्षीय-उद्बोधन' (नाम में भले ही दम हो) के लिए वरिष्ठ खड़े होने लगते हैं तो डगमगाने लगते हैं कि तीन घंटे से खुद को जगाए रखने की कोशिश में पैर कब सो गया, पता ही नहीं चलता। चार-छह वक्ता अगर सुनने वालों को पूरी तरह चूस चुके हों तो अध्यक्ष के लिए जूठन भी नहीं बची रहती है। जैसे ही अध्यक्ष पूरी हिम्मत, साहस और याददाश्त के सहारे माइक पकड़ते हैं, सबसे पहले आयोजन समिति हॉल छोड़ देती है कि चाय-नाश्ते का देख लें... इंतजाम हुआ भी या नहीं! मुझे तो यही लगता है कि अध्यक्ष वाला पेंच डाला ही इसलिए जाता है कि चाय-नाश्ते का इंतजाम देख लें और टेस्ट भी कर लें। सुनने वाले भी उम्मीद से हो जाते हैं कि अध्यक्ष निपटा नहीं कि चाय-समोसे मिलेंगे।

अध्यक्षीय-उद्बोधन और कुछ नहीं... रि-केप की तरह होता है कि अब तक आपने ये...ये...ये सुना और मेरा कहना यही है कि ये...ये...ये... ने जो कहा है... वो... वो... वो ठीक है, पर यहां यह भी ध्यान देना होगा कि ये...ये...ये से ही हम संतुष्ट ना हो जाएं..., वो...वो...वो की तरफ भी हम ध्यान दें। जैसे वक्ताओं ने भाषणों की जलेबी बना दी है तो अध्यक्ष को यह कहना ही पड़ेगा कि जलेबी नरम ना पड़ जाए, यह ध्यान भी हमें ही रखना होगा। गरम-गरम जलेबी अगर डिब्बे में भर दी जाएगी तो कड़क कैसे रहेगी। थोड़ी देर ठंडी करें और फिर भरें। यानी नाचे-कूदे बांदरी, खीर खाए फकीर! केक कोई बनाए और आप आइसिंग कर दें और पूछें 'केक कैसा लगा?' इसी कपटी खेल में पारंगत होना होता है अध्यक्ष महोदय को! इसीलिए मैं इंकार करता हूं। बोलना बंद कर दूंगा, लेकिन 'अध्यक्ष महोदय' कभी नहीं बनूंगा। औरों की मेहनत से अपना कद बढ़ा लूं, मुझसे नहीं होगा। यह तो ऐसा ही होगा कि भाजपा के लिए खपे तो आडवाणी और प्रधानमंत्री बन गए मोदी!

ए.आइ. तो बच्चा है जी... !

❐ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

ए.आइ. तो बिलकुल बच्चे जैसा है। जैसा उसे सिखाएंगे, वैसा ही सीखता जाएगा। अरण्य सहाय की फिल्म **'ह्यूमंस इन द लूप'** की यह बात फिल्म की शुरुआत में नेहमा (सोनल मधुशंकर) से उसकी ट्रेनर अलका मैडम कहती हैं और धीरे-धीरे नेहमा के साथ- साथ देखने वाले भी इंसान और ए.आइ. के रिश्ते को अलग ही नजर से देखने लगते हैं।

फिल्म **'ह्यूमंस इन द लूप'** झारखंड की उन आदिवासी महिलाओं की कहानी है, जो दिन भर कंप्यूटर के सामने बैठ कर अलग-अलग तस्वीरों को देख कर डाटा लेबलिंग का काम कर रही हैं। यह वो काम कर रही हैं, जिसकी बदौलत ए.आइ. की ताकत दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। इंसानों को मशीन की तरह सोचना-सीखना पड़ रहा है ताकि मशीन को यह सिखा सकें कि उसे किस तरह इंसानों की तरह काम करना है।

फिल्म की ताकत इसमें है कि यह ए.आइ. के बारे में कैसे बात करती है। ए.आइ. को खतरा दिखाने के बजाय इसकी तुलना ऐसे बच्चे से करती हैं, जो इंसान से सीखता है। यह समझ आता है कि कैसे रोजमर्रा के फैसलों के जरिए सिस्टम की सोच बनाते हैं। दफ्तर के दृश्य हकीकत लगते हैं। स्क्रीन के सामने घंटों बैठना, लगातार सुधार और कर्मचारियों के बीच हलकी-फुलकी बातचीत। भावुक पल तब सामने आता है, जब नेहमा अपने लड़के को लड़खड़ाते पहला कदम उठाते देखती है। नेहमा की खामोशियों और ठहरावों पर फिल्म समय बिताती है, ताकि हमें उसके शांत चेहरे के पीछे छिपी बेचैनी दिखाई दे। कॉर्पोरेट, उनके नियम, मशीनें किसी को कभी भी शैतान नहीं बनाया जाता।

नेहमा गांव लौट आई है, उसका तलाक हो गया है (यहां आदिवासी प्रथा, जिसमें बिना शादी के साथ रहने की बात और उससे जुड़े मसलों को अरण्य ने मंजे हुए फिल्मकार की तरह शामिल किया है)। उसकी बड़ी लड़की धानु है और बच्चा गोद में है। नेहमा अकसर साही की तस्वीर देख कर खुद के बचपन में खो जाती है, जहां उसने प्रकृति को नजदीक से देखा, जाना और महसूस किया। कोशिश करती है कि लड़की भी इसे महसूस करे, पर रिश्तों के तनाव बार-बार उभर आते है। पूरी फिल्म में यह एहसास रहता है कि सोनल से बेहतर इस किरदार को कोई और नहीं कर सकता था।

मां और लड़की की शुरुआत अलग-अलग है, लेकिन धानु के फोटो के सहारे ही नेहमा आदिवासी महिला की बेहतर छवि ए.आइ. को सिखा देती है और इसी के सहारे दोनों किरदारों की भी दूरी कम होती है। 'ह्यूमंस इन द लूप' खतरों से डराती नहीं बल्कि दिखाती है कि हमें अपने पूर्वाग्रहों से छुटकारा पाना ज्यादा जरूरी है। अगर नेहमा भी फसल के लिए मददगार कीड़े को पेस्ट बोलना शुरू कर देगी तो कीड़ा पेस्ट ही कहलाएगा, लेकिन अगर उस कीड़े की खूबियों को बताएगी तो ही आने वाले दौर में नुकसान पहुंचाने और मदद करने वाले कीड़े में फर्क बचा रह पाएगा।

यह बात सिर्फ कीड़ों पर ही लागू नहीं होती है, यह याद रखना खास है अरण्य की इस खूबसूरत, शांत और मौजूं फिल्म की। फिल्म नेटफ्लिक्स पर है और जरूर देखी जानी चाहिए।